

# कल्याण

मूल्य ८ रुपये



वर्ष  
९०

गीताप्रेस, गोरखपुर

संख्या  
७





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**  
  
**By**  
**Avinash/Shashi**

**Icreator of**  
**hinduism**  
**server!**





ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥



# कल्याण

ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः । नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तु ते ॥  
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः । सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥

वर्ष  
१०

गोरखपुर, सौर श्रावण, वि० सं० २०७३, श्रीकृष्ण-सं० ५२४२, जुलाई २०१६ ई०

संख्या  
७

पूर्ण संख्या १०७६

## अहल्या-उद्धार

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।  
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥  
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवइ बचन कही ।  
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ॥  
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहूँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।  
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ॥  
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।  
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई ॥

[ श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड ]



हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

(संस्करण २, १५, ०००)

कल्याण, सौर श्रावण, वि० सं० २०७३, श्रीकृष्ण-सं० ५२४२, जुलाई २०१६ ई०

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१- अहल्या-उद्धार.....	३	१६- मधुराद्वैताचार्य संत श्रीगुलाबरावजी महाराज	
२- कल्याण .....	५	(डॉ० श्रीअरविन्द स० जोशी मेहेकर) .....	३१
३- कौरव-सभामें श्रीकृष्णका विराट्-रूप [आवरणचित्र-परिचय] ..	६	१७- रूप-स्मरणका प्रभाव [श्रीरामकथाका एक पावन-प्रसंग]	
४- भगवदर्थ कर्म और भगवान्की दयाका रहस्य		(आचार्य श्रीरामरंगजी) .....	३४
(ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) .....	७	१८- भावकी शुद्धिसे कर्मकी शुद्धि	
५- सद्बुद्धिका अभाव (ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज) ..	१०	(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) .....	३५
६- नटराज-उपाधिके रहस्य (श्री 'प्रसन्न') .....	११	१९- माँ [कविता] (श्रीपुष्पेन्द्रसिंहजी रघुवंशी, बी०ए०, डी०एड०) .....	३५
७- अपनी निर्बलता और भगवान्की कृपा		२०- दुःखमें सुख [कहानी] (श्रीरामेश्वरजी टांटिया)	
(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) ...	१२	[प्रेषक—श्रीनन्दलालजी टांटिया] .....	३६
८- 'ईश्वर अंस जीव अबिनासी' (श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्रीवेदान्तीजी		२१- दृढनिश्चय [प्रेरक-प्रसंग] .....	३७
महाराज) [प्रेषक—श्रीमोहनकुमारजी शर्मा] .....	१४	२२- राम-नामका अखूट खजाना (महात्मा गाँधीजी) .....	३८
९- साधकोंके प्रति—		२३- सङ्कीर्तनम् [कविता] (आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादजी मिश्र 'विनय') .....	३८
(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) .....	१५	२४- अणुयुद्ध हुआ तो गायके गोबरसे लिपा घर ही बचेगा (श्रीरजतकुमारजी) ...	३९
१०- सूरकाव्यमें राधा (सुश्री डॉ० नीतू सिंहजी) .....	१८	२५- साधनोपयोगी पत्र .....	४०
११- श्रावणमास और उसके व्रत-पर्वोत्सव .....	२०	२६- कृपानुभूति .....	४३
१२- 'सुख' सम्पन्नताका मोहताज नहीं (श्रीताराचन्दजी आहूजा) ..	२२	२७- अवन्तिका-माहात्म्य .....	४४
१३- दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ और पूर्णब्रह्म श्रीरामभद्र		२८- पढ़ो, समझो और करो .....	४५
(श्रीनिमाइचरणजी मिश्र) .....	२४	२९- मनन करने योग्य .....	४८
१४- भगवान् श्रीकृष्णका नटवरवेश [कविता] (डॉ० श्रीरामनिवासजी पाठक) ....	२६	३०- 'कल्याण' का आगामी ११वें वर्ष (सन् २०१७ ई०)-का	
१५- मन्त्र-सिद्धि [कहानी] (श्रीसुदर्शनसिंहजी 'चक्र') .....	२७	विशेषाङ्क 'श्रीशिवमहापुराणाङ्क' .....	४९

## चित्र-सूची

१- कौरव-सभामें श्रीकृष्णका विराट्-रूप .....	(रंगीन) .....	आवरण-पृष्ठ
२- अहल्या-उद्धार .....	( " ) .....	मुख-पृष्ठ
३- श्रीरामका ताराको उपदेश देना .....	(इकरंगा) .....	१४
४- दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा .....	( " ) .....	२४
५- संत श्रीगुलाबरावजी महाराज .....	( " ) .....	३१
६- सेठ-सेठानीको सान्त्वना देते नाथजी .....	( " ) .....	३७
७- मिथ्या गर्वका परिणाम .....	( " ) .....	४८

### एकवर्षीय शुल्क

अजिल्द ₹२००

सजिल्द ₹२२०

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनंद भूमा जय जय॥

जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥

जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

विदेशमें Air Mail }  
सजिल्द शुल्क }

वार्षिक US\$ 45 (₹2700)  
पंचवर्षीय US\$ 225 (₹13500)

{ Us Cheque Collection  
{ Charges 6\$ Extra

### पंचवर्षीय शुल्क

अजिल्द ₹१०००

सजिल्द ₹११००

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका

आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

सम्पादक—राधेश्याम खेमका, सहसम्पादक—डॉ० प्रेमप्रकाश लक्कड़

केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website : [www.gitapress.org](http://www.gitapress.org)

e-mail : [kalyan@gitapress.org](mailto:kalyan@gitapress.org)

☎ (0551) 2334721

सदस्यता-शुल्क—व्यवस्थापक—'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर को भेजें।

Online सदस्यता-शुल्क—भुगतानहेतु-[gitapress.org](http://gitapress.org) पर Online Magazine Subscription option को click करें।

अब 'कल्याण' के मासिक अङ्क [kalyan-gitapress.org](http://kalyan-gitapress.org) पर निःशुल्क पढ़ें।

‘शिव’

### आवरणचित्र-परिचय—

## कौरव-सभामें श्रीकृष्णका विराट्-रूप

पाण्डवोंके वनवास और अज्ञातवासकी अवधि पूरी होनेपर भी दुर्योधनने जब युद्धके बिना सुईकी नोकके बराबर भी भूमि देनेसे इनकार कर दिया तो युद्ध निश्चित हो गया, पर युद्धमें भीषण संहार होगा—यह विचारकर महाभारत-युद्धको टालनेके अन्तिम प्रयासके रूपमें भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवोंके दूत बनकर दुर्योधनको समझानेके उद्देश्यसे हस्तिनापुर गये। वहाँ उन्होंने दुर्योधनको बहुत समझाया कि वह पाण्डवोंको पाँच गाँव ही देकर सन्धि कर ले; किंतु हठधर्मी दुर्योधनने उनकी सब बातें अस्वीकार कर दीं। उलटे वह कर्ण आदि अपने मित्रोंसे सलाह करने लगा कि श्रीकृष्णको पकड़कर कारागारमें डाल दिया जाय। इस बातको जानकर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने अपना भयानक विराट्-रूप प्रकट किया।

उन्होंने दुर्योधनसे कहा—दुर्बुद्धि दुर्योधन ! तू मोहवश जो मुझे अकेला मान रहा है और इसलिये मेरा तिरस्कार करके जो मुझे पकड़ना चाहता है, यह तेरा अज्ञान है। देख, सब पाण्डव यहीं हैं। अन्धक और वृष्णिवंशके वीर भी यहीं मौजूद हैं। आदित्यगण, रुद्रगण तथा महर्षियोंसहित वसुगण भी यही हैं। ऐसा कहकर वे उच्च स्वरसे अट्टहास करने लगे। हँसते समय उन महात्मा श्रीकृष्णके श्रीअंगोंमें स्थित विद्युत्के समान कान्तिवाले तथा अँगूठेके बराबर छोटे शरीरवाले देवता आगकी लपटें छोड़ने लगे। उनके ललाटमें ब्रह्मा और वक्षःस्थलमें रुद्रदेव विद्यमान थे। समस्त लोकपाल उनकी भुजाओंमें स्थित थे। उनके मुखसे अग्निकी लपटें निकल रही थीं। आदित्य, साध्य, वसु, अश्विनीकुमार, इन्द्रसहित मरुद्गण, विश्वेदेव, यक्ष, गन्धर्व, नाग और राक्षस भी उनके विभिन्न अंगोंमें प्रकट हो गये। उनकी दोनों भुजाओंसे बलराम और अर्जुन प्रकट हो गये। उनकी दाहिनी भुजामें अर्जुन और बायींमें हलधर बलराम विद्यमान थे। भीमसेन, युधिष्ठिर तथा

आदि वृष्णिवंशी तथा अन्धकवंशी योद्धा हाथोंमें विशाल आयुध लिये भगवान्‌के अग्रभागमें प्रकट हुए। शंख, चक्र, गदा, शक्ति, शार्ङ्ग धनुष, हल तथा नन्दक नामक खड्ग—ये ऊपर उठे हुए समस्त आयुध श्रीकृष्णकी अनेक भुजाओंमें देदीप्यमान दिखायी देते थे। उनके नेत्रोंसे, नासिकाके छिद्रोंसे और दोनों कानोंसे सब ओर अत्यन्त भयंकर धूमयुक्त आगकी लपटें प्रकट हो रही थीं। समस्त रोमकूपोंसे सूर्यके समान दिव्य किरणें छिटक रही थीं। महात्मा श्रीकृष्णके उस भयंकर स्वरूपको देखकर समस्त राजाओंके मनमें भय समा गया और उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये। द्रोणाचार्य, भीष्म, परम बुद्धिमान् विदुर, महाभाग संजय तथा तपस्याके धनी महर्षियोंको भगवान् जनार्दनने स्वयं ही दिव्य दृष्टि प्रदान की थी, जिससे वे उनका दर्शन करनेमें समर्थ हो सके थे।

धृतराष्ट्र ने प्रार्थना कि भगवन्! मेरे नेत्रों का तिरोधान हो चुका है; परन्तु आज मैं आपसे पुनः दोनों नेत्र माँगता हूँ। केवल आपका दर्शन करना चाहता हूँ; आपके सिवा और किसीको मैं नहीं देखना चाहता। तब महाबाहु जनार्दन ने धृतराष्ट्र से कहा—‘कुरुनन्दन! आपको दो अदृश्य नेत्र प्राप्त हो जायँ।’ इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से उनके विश्वरूप का दर्शन करने के लिये धृतराष्ट्र को भी नेत्र प्राप्त हो गये।

उस समय भगवान् श्रीकृष्णके विराट्-रूप धारण करनेसे सारी पृथ्वी डगमगाने लगी, समुद्रमें खलबली मच गयी और समस्त भूपाल अत्यन्त विस्मित हो गये।

उस समय सभाभवनमें भगवान् श्रीकृष्णका वह परम आश्चर्यमय रूप देखकर देवताओंकी दुन्दुभियाँ बजने लगीं और उनके ऊपर फूलोंकी वर्षा होने लगी। तदनन्तर शत्रुओंका दमन करनेवाले पुरुषसिंह श्रीकृष्णने अपने इस स्वरूपको उस दिव्य, अब्द्धत एवं





सबपर अपार है, उसको पूर्णतया न समझनेके कारण ही हमलोग प्रसन्नता और शान्तिकी प्राप्तिसे वंचित रहते हैं। हमलोगोंपर भगवान्की जो अपार पूर्ण दया है, उसके शतांशको भी हम नहीं समझते हैं। किंतु न समझमें आनेपर भी हमलोगोंको अपने ऊपर भगवान्की अपार दया मानते रहना चाहिये। ऐसा करनेसे वह आगे जाकर समझमें आ सकती है।

दयाके इस तत्त्वको भलीभाँति समझनेके लिये यहाँ एक दृष्टान्त बतलाया जाता है। वह इस प्रकार है—एक क्षत्रिय-बालक राज्यकी सहायता और व्यवस्थासे एक महाविद्यालयमें अध्ययन करता था। उसके माता-पिता उसे सदा यही उपदेश दिया करते थे कि ‘इस देशके राजा उच्चकोटिके ज्ञानी योगी महापुरुष हैं, वे हेतुरहित प्रेमी और दयालु हैं, उनकी हमलोगोंपर बड़ी भारी दया है। हमलोगोंका देहान्त हो जाय तो तुम चिन्ता न करना; क्योंकि महाराज साहबकी दया तुमपर हमलोगोंकी अपेक्षा अतिशय अधिक है।’ माता-पिताके इस उपदेशके अनुसार वह ऐसा ही मानता था। समय आनेपर उसके माता-पिता चल बसे, परंतु वह बालक दुःखित नहीं हुआ। विद्यालयके सहपाठी बालकोंने उससे पूछा—‘तुम्हारे माता-पिता मर गये, फिर भी तुम्हारे चेहरेपर खेद नहीं, क्या बात है? अब तुम्हारा पालन-पोषण कौन करेगा?’ क्षत्रिय बालकने कहा—‘मुझे शोक क्यों होता? क्योंकि मेरे माता-पितासे भी बढ़कर मुझपर दया और प्रेम करनेवाले हमारे परम हितैषी महाराज साहब हैं। महाराज साहब उच्चकोटिके ज्ञानी महापुरुष हैं। मैं तो उन्हींपर निर्भर हूँ।’ बालककी यह बात सुनकर वहाँके प्रधानाध्यापकको बड़ा आश्चर्य हुआ कि देखो, इस बालकके हृदयमें महाराज साहबके प्रति कितनी श्रद्धा-भक्ति है। वे प्रधानाध्यापक राज्यकी कौंसिलके सदस्य थे। एक दिन जब कौंसिलकी बैठक हुई, तब वे भी उसमें उपस्थित थे। उस दिन महाराज साहबने कहा—‘अपने देशमें कोई अनाथ बालक हो तो बतलायें,

उसका प्रबन्ध राज्यकी ओरसे सुचारु रूपसे हो जाना उचित है।’ कौंसिलके कई सदस्योंने उसी क्षत्रिय बालकका नाम बतलाया। इसपर राजाने सबकी सम्मतिसे उस बालकके लिये खाने-पीनेका सब प्रबन्ध कर दिया और उसके कच्चे घरको पक्का बनानेका आदेश दे दिया पढ़ाईका प्रबन्ध तो पहलेसे ही राज्यकी ओरसे था ही।

कुछ ही दिनों बाद जब राजाकी आज्ञासे राजकर्मचारी उसके कच्चे घरको पक्का बनानेके लिये तोड़ रहे थे, तब उस क्षत्रिय बालकके एक सहपाठीने दौड़कर उसे सूचना दी कि तुम्हारे घरको राजकर्मचारी तोड़कर बर्बाद कर रहे हैं। यह सुनकर वह बालक बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा—‘अहा! महाराज साहबकी मुझपर बड़ी ही दया है। सम्भव है, वे पुराना तुड़वाकर नया घर बनवायेंगे!’ उसकी यह बात सुनकर प्रधानाध्यापक आश्चर्यचकित हो गये और सोचने लगे—‘देखो, इस बालकको कितना प्रबल विश्वास है। महाराजपर कितनी अटूट श्रद्धा है।’

पुनः जब दूसरी बार कौंसिलकी बैठकमें प्रधानाध्यापक सम्मिलित हुए, तब राजाने यह प्रस्ताव रखा—‘मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरे संतान नहीं है। अतः युवराजपद किसको दूँ? इसके योग्य कौन है?’ इसपर प्रधानाध्यापकने बतलाया—‘वह क्षत्रिय बालक गुण, आचरण, विद्या और स्वभावमें सबसे बढ़कर है। वह राजभक्त है और आपपर तो उसकी अपार श्रद्धा है।’ इस बातका दूसरे सदस्योंने भी प्रसन्नतापूर्वक समर्थन किया। राजाने सर्वसम्मतिसे उस क्षत्रिय बालकको ही युवराजपद देनेका निर्णय कर दिया।

दूसरे दिन राजाके मन्त्री और कुछ उच्चपदाधिकारी उस क्षत्रिय बालकके घरपर गये। उन सबको आते देख उस क्षत्रिय बालकने उनका अत्यन्त आदर-सत्कार किया और कहा—‘मैं आपकी क्या सेवा करूँ?’ पदाधिकारियोंने कहा—‘महाराज साहबकी आपपर बड़ी भारी दया है।’ बालक बोला—‘यह मैं पहलेसे ही जानता हूँ कि महाराजकी मुझपर अपार दया है। इसी कारण आपलोगोंकी भी मुझपर बड़ी दया है।’



## सद्बुद्धिका अभाव

( ब्रह्मलीन धर्मसम्प्रदाय स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज )

परतन्त्रता, दरिद्रता, अनेक प्रकारकी विपत्तियाँ भले ही रहें, पर यदि सद्बुद्धि हो तो प्राणी अपना जीवन मंगलमय बना सकता है। बुद्धिमान् मनुष्य अपने बुद्धि-वैभवसे संसारमें दुर्घट-से-दुर्घट कार्योंका सम्पादन कर सकता है, पर यदि सब कुछ हो और केवल सद्बुद्धि न हो तो फिर धीरे-धीरे ऐश्वर्य, स्वातन्त्र्य, गाम्भीर्य विदा हो जाते हैं और मूर्खता अपनी सहचारिणी दरिद्रता, परतन्त्रता, दीनता आदिको बुलाकर बैठा लेती है। आज अपने यहाँ सद्बुद्धिका अभाव हो रहा है, तभी तो उन्नतिकी ओर अग्रसर करनेवाला कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता। सब पापोंका मूल, सब अनर्थोंकी जननी दुर्मति है। इस दुर्मति या मूर्खताका ही परिणाम है कि आज जो कोई अच्छी बात कहे तो भी समझा जाता है कि वह हमारा अकल्याण करना चाहता है। जैसे भेड़ें मूर्खतावश कुएँमें गिरने चलें और कोई रोकना चाहे, तो वे समझने लगती हैं कि यह हमारा शत्रु है। जब अपने हितैषीसे वैमनस्य हो जाता है, कल्याणकारीसे विद्वेष किया जाता है, तब मूर्खताकी अन्तिम पराकाष्ठा हो जाती है। वेदशास्त्र कहते हैं कि धर्मसे कल्याण होता है। सुख चाहना, स्वतन्त्रता चाहना, अनन्त शक्ति चाहना, परंतु उन सबके मूल धर्मसे शत्रुता करना—यह मूर्खता है। परतन्त्रता मिटाना, दीनता-हीनतासे घृणा करना, पर पापसे प्रेम करना—यह उलटा मार्ग है। सत्पुरुष पुकार-पुकारकर कहते हैं—‘यदि सुख चाहते हो, सम्पत्ति चाहते हो, स्वराज चाहते हो, मोक्ष चाहते हो, तो धार्मिक बनो’, पर दुर्मतिके कारण ऐसे लोगोंको देशद्रोही कहा जाता है, क्या यह मूर्खताकी पराकाष्ठा नहीं है? इसीलिये तो कहना पड़ता है कि भारतवर्षमें जो दरिद्रता तथा परतन्त्रता है वह तो है ही, पर यह जो मूर्खता आयी है, वह एक भयानक विपत्ति है। क्या कारण है कि भारतवर्ष, जो पावित्र्य क्षेत्र है, जहाँ पावित्र्यसलिलों का-

यमुनाकी निर्मल धारा प्रवाहित होती है, वहीं आज इतना भौतिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक पतन हो रहा है। हमें अहंकार और गर्व रहता है कि हम कुछ कर लेंगे, हम भगवान्को न पुकारेंगे, उनकी शरणमें न जायेंगे, किंतु जो जीमें आयेगा करेंगे। बस, यही तो दुर्बुद्धि है।

ग्वालोंके समान देवता हाथमें डण्डा लेकर मनुष्योंकी रक्षा नहीं करते, वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे सुबुद्धि देते हैं—

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।

यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संयोजयन्ति तम्॥

बिना सद्बुद्धिके धर्माधर्मका ज्ञान होना कठिन है।

आज ऐसा भयंकर समय है कि धर्मके नामपर ही धर्मके विपरीत प्रचार किया जा रहा है। दस-बीस धनी-मानी जिसे मानने लगते हैं, दस-पाँच अखबार जिसके हाथमें हैं, वह मनमानी विषकी घूँटी जनताको पिला सकता है। प्राणीमात्रको हर्ष या शोकमें एक-न-एक आश्रयकी आवश्यकता होती है, परंतु आज प्राणी प्रधान आश्रय ईश्वर और धर्मको छोड़कर सुख-साम्राज्यका स्वप्न देख रहा है। कहा जाता है कि आज दिन धर्म करनेवाले अवनतिके गर्तमें देखे जा रहे हैं और उसकी उपेक्षा करनेवाले फल-फूल रहे हैं, परंतु यहाँपर यह ध्यान रखना चाहिये कि प्राणी अधर्मसे—पापसे पहले बढ़ता है; पुत्र, पौत्र, धन-धान्य, सम्पत्ति आदिका दर्शन करता है, शत्रुओंपर विजय प्राप्त करता है परंतु जब विनाश होना प्रारम्भ होता है, तब फिर आमूलचूल होकर ही रहता है। यह कोई अधर्मकी ही महिमा नहीं है कि उससे प्रथम उन्नति हो, किंतु उस उन्नतिमें भी पहलेका धर्म ही कारण होता है—

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।

शनैरावर्तमानस्तु कर्तुमूलानि कृन्तति॥

इसीलिये फलमें कुछ देर भले ही हो, पर अंधेर नहीं हो सकता, परंतु जब अधर्म और दुर्बुद्धिका कुचक्र



सर्वान्तर्यामी, परमदयालु, भक्तवत्सल भगवान्को छोड़कर और किसका सहारा पकड़ा जाय ? भगवत्कृपासे जहाँ प्राणियोंमें सद्बुद्धि आयी कि धर्मकी रक्षा हुई, धर्ममें लोगोंकी प्रवृत्ति हुई तो फिर इसके द्वारा प्राणियोंका कल्याण हुआ। हम सर्वथा असहाय हैं, हमारे पास अस्त्र-शस्त्र नहीं, ऐसी स्थितिमें भगवान्को पुकारनेके सिवा हम कर ही क्या सकते हैं ? गायत्री हमलोगोंका महामन्त्र है, समस्त वेदोंका सार है। उसमें धन नहीं माँगा गया, पुत्र-पौत्र नहीं माँगे गये, स्वतन्त्रता, स्वराज्य नहीं माँगा गया। उसमें तो केवल यही प्रार्थना की गयी है कि ‘हे पुरुषोत्तम ! हे सर्वात्मन् ! हे सर्वान्तरव्यापिन् भगवन् ! हमारी बुद्धिको सद्बिचारोंकी ओर प्रेरित कीजिये।

बड़ा ही आनन्द हुआ। फिर सब देवोंसे, विशेषकर नारदजीसे प्रेरित होकर उन्होंने यह वर माँगा कि 'हे देवि ! इस आनन्दको केवल हमीलोग लेते हैं, किंतु पृथिवीतलमें एक ही नहीं, हजारों भक्त इस आनन्दसे तथा नृत्य-दर्शनसे वंचित रहते हैं, अतएव मृत्युलोकमें भी जिस प्रकार मनुष्य इस आनन्दको प्राप्त करें, ऐसा कीजिये, किंतु मैं अपने ताण्डवको समाप्त करूँगा और 'लास्य' करूँगा।' इस बातको सुनकर श्रीआद्या भुवनेश्वरी महाकालीने 'एवमस्तु' कहा और देवगणोंसे मनुष्य-अवतार लेनेको कहा और स्वयं श्यामा (आद्या महाकाली) श्यामसुन्दरका अवतार लेकर श्रीवृन्दावनधाममें आयीं और श्रीशिवजी (महाकाल)-ने राधाजीका अवतार लेकर ब्रजमें जन्म लिया और 'देवदुर्लभ रासमण्डल' की आयोजना की और वही 'नटराज' की उपाधि यहाँ श्यामसुन्दरको दी गयी। बोलो नटराज भगवान्की जय!

\* यह कथा श्रीरामकृष्ण परमहंसजी महाराजकी शिष्य-परम्पराके किसी वयोवृद्ध परम भक्त वैष्णवने सुनी थी और मुझे काशीमें ‘श्रीशिव-पार्वती’ तथा ‘कृष्ण-राधा’ में ऐक्यभाव है, इस दृष्टिसे उन्होंने समझायी थी और किसी उपपुराणका नाम भी बताया था, वह मुझे स्मरण नहीं है। भक्तजन लाभ उठायें, इसीलिये इसे लिख दिया।

भगवान् ने कहा है—‘मद्भक्तिम्।’ इस प्रकारका होनेके बाद उसको मेरी भक्तिकी प्राप्ति होती है। मेरी पराभक्तिकी। मेरी भक्ति प्राप्त होनेके बाद क्या होता है ? ‘भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।’ यह बहुत सावधानीसे समझनेका प्रसंग है। जब हम

अर्जुन! तुम मेरे प्यारे हो। इसलिये जो बात सब प्रकारसे छिपी हुई है, वह कहता हूँ। एक होता है गुह्य, एक गुह्यतर, एक गुह्यतम और एक सर्वगुह्यतम। छिपी हुई बातको कहते हैं—गुह्य। जो छिपी हुई में छिपी हुई है उसे—गुह्यतर। छिपी हुई में छिपी हुई में छिपी हुईको



## ‘ईस्वर अंस जीव अबिनासी’

( श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्रीवेदान्तीजी महाराज )

तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥

(रा०च०मा० ४।११।३)

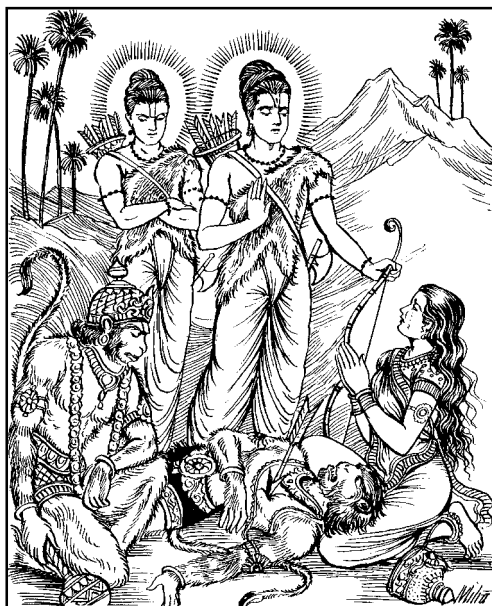
रामने ताराको क्या ज्ञान दिया ?

छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥

प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । जीव नित्य केहि लागि तुम्ह रोवा ॥

(रा०च०मा० ४।११।४-५)

भगवान् रामने पूछा कि ऐ तारा? तू क्यों रो रही



है ? तेरे रोनेका कारण क्या है ? ताराने रोकर कहा कि मेरा पति मर गया है। इस कारण मैं रोती हूँ। भगवान् रामने पूछा कि तुम्हारे पतिका शरीर मर गया है या तुम्हारे पति बालिकी आत्मा मर गयी है ?

जीवात्माके लिये नहीं रोना चाहिये और अधम शरीर सदा मरा हुआ है, इसलिये शरीरके लिये भी नहीं रोना चाहिये। जैसे जबतक मोटरमें ड्राइवर रहकर मोटर चलाता है, तबतक मोटर दौड़ती रहती है, परंतु मोटर दौड़नेसे चेतन नहीं हो जाती, जड़ (मुर्दा) ही रहती है और ड्राइवरके उतर पड़नेपर जब मोटर दौड़ना बन्द कर देती है और खड़ी हो जाती है तब भी मोटर जड़ (मुर्दा) ही है। उसी प्रकार जबतक शरीररूपी मोटरमें जीवात्मा

रूपी ड्राइवर रहता है, तबतक शरीररूपी मोटर सारे काम करती रहती है, परंतु शरीर सारे काम करते हुए भी जड़ (मुर्दा) ही रहता है और जब जीवात्मारूपी ड्राइवर उतर पड़ता है, तब भी शरीर मुर्दा ही है अर्थात् जीवात्मा सदा जिन्दा है और शरीर सदा मुर्दा है, फिर किसके मरनेका शोक करती है ? शरीर सदा मरा हुआ है। शरीरको कभी जिन्दा समझना और कभी मुर्दा समझना महान् मूर्खता है। शरीरको सदा मरा हुआ जड़ समझना चाहिये और जीवात्माको सदा जिन्दा चेतन समझना चाहिये। ऐसा समझ लेनेपर मरनेका शोक दूर हो जायगा।

जीव मेरा अंश है। वही तुम्हारे पतिका और तुम्हारा भी स्वरूप है। तुम तारा नहीं, तारा शरीरका नाम है। उपजा ग्यान चरन तब लागी। लीह्येसि परम भगति बर मागी ॥

(रा०च०मा० ४।११।६)

अब ताराको ऐसा ज्ञान हो गया कि ईश्वरका अंश होनेसे जीवात्मा अजन्मा अविनाशी है और वही जीवात्मा मैं भी हूँ। इससे अपने अंशी भगवान् रामसे प्रेम करना चाहिये तथा शरीरोंका मोह नहीं करना चाहिये; क्योंकि मायासे उत्पन्न हुए मिथ्या पंचभूतोंसे रचित होनेसे शरीर जड़ और असत् है। मायासे उत्पन्न पदार्थ सत्य नहीं होते। अतः ताराने ज्ञान उत्पन्न होनेपर भगवान्के चरणोंमें प्रणाम किया और परम भक्तिका वर माँग लिया; क्योंकि अंशको अंशीसे ही प्रेम करना चाहिये, जैसे सूर्यकी किरणोंका सूर्यसे ही सम्बन्ध हो सकता है और किसीसे नहीं। सारे जीव किरणोंके समान हैं और ईश्वर सूर्यके समान है। इसीलिये मीराका निश्चय था कि—

‘मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई॥’

जैसे मुनीम दुकानकी सेवा सेठके नातेसे और माली बगीचेकी सेवा मालिकके नातेसे करता है। उसी प्रकार भगवान्‌के नातेसे संसारकी सेवा करना चाहिये, परंतु भगवान्‌को छोड़कर ममता किसीसे नहीं करना चाहिये।

## साधकोंके प्रति—

( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज )

[ भगवान्का भजन करनेमें ही कल्याण है ]

[ गताङ्क ६ पृ० २१ से आगे ]

मनुष्य-शरीरमें आप केवल परमात्माकी प्राप्ति कर सकते हैं और कुछ नहीं कर सकते। आपको वहम है कि हम धनी हो जायँगे, हमारा नाम हो जायगा, पर कितने दिन? जितने दिन आप उसमें राजी रहो, उतने दिन आपके मुफ्तमें, ठगाईमें चले गये। अगर आप होशमें रहते तो इस प्रकार धोखेमें नहीं आते। बड़े-बड़े विरक्त और त्यागी संत-महापुरुष हुए हैं, क्या वे बे-अक्ल थे, जो त्याग करके भजनमें लग गये? क्या उनमें समझ नहीं थी? वे तो सार चीजमें लगे थे।

एक संत थे। वे भिक्षाके लिये एक सेठके यहाँ गये। सेठने आकर नमस्कार किया तो संतने भी उसको नमस्कार किया। वह संतके पैरों पड़ा तो संत भी उसके पैरों पड़े। सेठ बोला कि 'महाराज! आप कैसे पैरों पड़ते हैं?' संत बोले कि 'तुम कैसे पैरों पड़ते हो?' तो सेठने कहा कि 'महाराज! आप त्यागी हो, आपने स्त्री, पुत्र, धन, जमीन, जायदाद, मकान आदिका त्याग किया है, इसलिये आप बड़े हो।' संतने उत्तर दिया कि 'अगर त्यागको देखें तो तुम बड़े हुए, क्योंकि तुमने स्त्री, पुत्र, धन आदिके लिये भगवान्का त्याग कर दिया है। बड़ी चीज भगवान् है कि रुपया? त्यागी तुम बड़े हुए कि मैं बड़ा हुआ? जो बड़ा त्याग करे, वह बड़ा त्यागी और जो छोटा त्याग करे, वह छोटा त्यागी। तुम कितने बड़े त्यागी हो कि संसारके भरोसे भगवान्को भी इस्तीफा देकर बैठ गये।' तो सज्जनो! ऐसे त्यागी आप बने बैठे हो। जरा सोचो तो सही, एक पलक मारते ही प्राण चले जायँगे तो उस समय धन, सम्पत्ति, वैभव क्या काम आयेगा? अगर भगवान्का भजन किया है तो वह काम आयेगा। लोगोंपर भी भजनका असर पड़ेगा। गोस्वामी तुलसीदासजीकी रामायणसे कितनोंको शान्ति मिलती है।

कितनोंकी जीविका चलती है। कितने आदमी सुधर जाते हैं। क्या कोई करोड़पति-अरबपति आदमी दुनियाँका इतना उपकार कर सकता है? नहीं कर सकता। अतः भगवान्के भजनमें लगकर आप दुनियाँका कितना भला कर सकते हैं, इसकी कोई गिनती नहीं है।

धन कमानेमें कोई स्वाधीनता नहीं है। सब लखपति नहीं बन सकते, पर एक लाख नाम रोजाना ले सकते हैं। साधारण-से-साधारण भाई-बहन भी अगर विचार कर लें कि रोजाना लाख नाम लेना है, तो लाख नाम रोजाना ले सकते हैं, परंतु लाख रुपया उम्रभरमें हरेकको देखनेको भी नहीं मिलता। जिसमें आप स्वतन्त्र हो, वह तो करते नहीं और जो करते हो, उसमें आप स्वतन्त्र नहीं। जिस धनका संग्रह करते हो, वह तो साथ जायगा नहीं और जो साथ जायगा, उस भजनका संग्रह करते नहीं। आपको होश कब आयेगा? चेत कब होगा? बच्चे कहते हैं कि जब हम बड़े होंगे, तब हम ऐसा करेंगे। माँ भी कहती है कि जब हमारा लाला बड़ा हो जायगा, तब ठीक काम करेगा। ऐसे ही मैं कहता हूँ कि आप कब बड़े होओगे? कब अपने उद्धारकी बात सोचोगे? अपने उद्धारकी बात किस दिनके लिये बाकी रखी है? बाल सफेद होने लगे हैं तो यह बुलावा आ गया है यमराजका!

महाराज दशरथजीने दर्पण लेकर अपना मुकुट ठीक किया तो देखा कि कानके पास बाल सफेद हो गये हैं, अब वृद्धावस्था कानमें आकर कह रही है कि चेत करो, बुलावा आ गया है, मौतका सन्देश आ गया है। 'श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा॥' जैसे लड़केके विवाहमें दूसरोंको बुलाते हैं तो पीले चावल देते हैं। विवाहके चावल पीले होते

खुला माल पड़ा हुआ है, फिर देरी किस बातकी ? जो साथमें चलता है, वह तो लेते नहीं और जो लेते हो, वह साथ चलता नहीं। क्या दशा होगी ? जरा सोचो। अच्छा काम करोगे, भजन-स्मरण करोगे तो यह पूँजी साथमें चलेगी। लोग भी सद्भावसे याद करेंगे। दुष्टताका काम करोगे तो मरनेपर लोग राजी हो जायँगे। एक पण्डितजी थे। वे काशीसे पढ़कर आये। पुस्तकें लदी हुई थीं। शहरमेंसे होकर निकले तो वर्षा आ गयी। पासमें छाता नहीं था, अतः एक मकानके भीतर दरवाजेमें खड़े हो गये। उसके ऊपर एक वेश्या रहती थी। बाहर कुछ आदमी एक मुर्देको लिये जा रहे थे। वेश्याने एक लड़कीसे कहा कि जाकर पता लगाओ कि 'यह स्वर्गमें गया या नरकमें गया।' यह सुनकर पण्डितजी ठहर गये कि देखें, ऐसी क्या विद्या है, जिससे मरनेवालेका पता लग जाय। थोड़ी देरमें लड़कीने आकर कहा कि 'यह तो नरकोंमें गया।' एक दूसरा मुर्दा जा रहा था। उसके लिये वेश्याने पूछा तो लड़कीने पता लगाकर कहा कि 'वह तो स्वर्गमें गया।' पण्डितजीने विचार किया कि मैं इतने वर्ष काशीमें रहा, कितनी पुस्तकें पढ़ीं, पर यह पता



नहीं लगता कि मरनेवाला कहाँ गया, यह विद्या तो हमें सीखनी है। पण्डितजी ऊपर चले गये। वेश्याने देखा कि यह मेरा ग्राहक तो है नहीं। उसने पण्डितजीको पहचान लिया और पूछा कि कैसे आये? पण्डितजीने कहा कि 'आदमी मरकर नरकोंमें गया या स्वर्गमें गया'—यह विद्या हम जानना चाहते हैं। वेश्याने उस लड़कीको बुलाया और कहा कि 'वह नरकमें गया या स्वर्गमें गया'—इसकी तूने कैसे परीक्षा की, यह महाराजको बता। वह कहने लगी कि 'महाराज! जो मुर्देको लेकर जा रहे थे, उनसे मैंने पूछा कि यह कहाँसे आया है? किस मोहल्लेका है? मैं उस मोहल्लेमें पहुँची। लोग रो रहे थे तो पता लगा कि इस घरका आदमी मर गया। मैंने पड़ोसियोंके घरोंमें जाकर सुना तो वे कह रहे थे कि वह आदमी मर गया तो हम निहाल हो गये। वह चुगली करता था, चोरी करा देता था, लड़ाई करा देता था, झूठी गवाही देकर फँसा देता था। मर गया तो बहुत अच्छा हुआ। नहीं तो बड़ी आफत करता था वह। ऐसी बातें मैंने कई घरोंमें सुनीं तो आकर कहा कि वह नरकोंमें गया। दूसरा मुर्दा आया तो उसके मोहल्लेमें जाकर देखा कि वहाँके घरोंमें लोग आपसमें बातें करते थे कि 'वह आदमी मर गया। राम-राम, गजब हो गया। वह तो अपने मोहल्लेका एक प्रकाश था। कोई संत-महात्मा आते तो वह सत्संग कराता, कोई बीमार होता तो रातों जागता था, दवाईका प्रबन्ध करता था, किसीपर कोई आफत आ जाय तो तन-मन-धनसे उसकी सहायता करता था, वह चला गया। हमारे मोहल्लेमें तो अँधेरा हो गया।' ऐसी बातें मैंने सुनीं तो आकर कहा कि 'वह तो स्वर्गमें गया।' पण्डितजीने कहा—अरे! ये बातें तो शास्त्रोंमें लिखी हैं कि 'जो अच्छे काम करता है, उसकी सद्गति होती है और जो बुरे काम करता है, उसकी दुर्गति होती है,' पर यह तो हमारी अक्लमें ही नहीं आयी।

अच्छे पुरुष चले जाते हैं तो पीछे उनकी महिमा होती है और बुरे पुरुष मर जाते हैं तो लोग राजी होते

हैं कि निहाल हुए, आफत मिटी। क्या आपको ऐसा बनना है कि पीछे लोग कहें कि आफत मिटी! अच्छा या बुरा बनना आपके हाथकी बात है। इसमें आपके भाग्यकी, योग्यताकी बात नहीं है। केवल आपकी दृष्टि दूसरोंका उपकार करनेकी, सेवा करनेकी होनी चाहिये। पहले जमानेमें लोग पैदल बदरीनारायण जाते थे पन्द्रह-बीस-पचास आदमी जा रहे हैं। उनमें बड़ी-बूढ़ी माताएँ भी हैं। रात्रिमें किसी चट्टीमें जाकर ठहरते हैं। बोझा लेकर चलनेके कारण बेचारे थक गये हैं और नींद आ रही है। उनमेंसे दो-चार अच्छे आदमी चट उठकर जाते हैं, जल भर देते हैं, लकड़ियाँ ले आते हैं और रसोई बनाते हैं। सोये हुआँको उठाकर कहते हैं कि भोजन करो। थके हुए हैं और भूख लगी हुई है, उठकर गरमागरम रोटी और दाल पा लेते हैं और फिर सो जाते हैं। बदरीनारायण तो सब जाते हैं, पर इस प्रकार सेवा करनेवालोंको जो फल मिलता है, वह सबको मिलता है क्या? जिनका दूसरोंकी सेवा करनेका स्वभाव होता है, वे जहाँ जायँगे, वहाँ भी दूसरोंकी सेवा करेंगे, तो उनका कितना पुण्य बढ़ेगा? यह स्वभाव आप बना सकते हो। ऐश-आराम करनेमें, हुक्म चलानेमें कोई लाभ नहीं है। लाभ सेवा करनेमें है, दूसरोंको सुख पहुँचानेमें है। मेरेको सुख-आराम मिले—यह लोभ तो कुत्तों और गधोंमें भी होता है, इसमें कोई मनुष्यता है? मनुष्यता तो त्याग करनेमें, सेवा करनेमें, दूसरोंको सुख पहुँचानेमें है। अगर ऐसा नहीं कर रहे हैं तो मनुष्यजन्म क्यों लिया। सीट क्यों रोकी? हमारी जगह कोई अच्छा प्राणी आता तो वह अपना कल्याण कर लेता। भगवान् कहते हैं—‘अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति’ (गीता ३।१६) वह इन्द्रियोंके द्वारा भोगोंमें रमण करनेवाला अघायु (पापमय जीवन बितानेवाला) मनुष्य संसारमें व्यर्थ ही जीता है, वह मर जाय तो अच्छा है। ‘भजन बिनु जीवत जैसे प्रेत’ वह जीना ही प्रेतके समान है। [ क्रमशः ]

## सूरकाव्यमें राधा

( सुश्री डॉ० नीतू सिंहजी )

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदीने अपनी पुस्तक 'सूरकी साहित्य साधना' में कृष्णकी अनन्य प्रेमिका राधाका चरित्र व्यक्त करते हुए लिखा है—'पर और भी धन्य है वह बाल किशोरी, वह 'लालकी बतरस लालचसे मुरली लुका धरनेवाली', वह आँखमिचौलीमें बड़ी आँखियनके कारण बदनाम बरसानेकी छबीली वृषभानुलली। वह बालिका है, वह किशोरी है, वह ग्वालनी है, वह ब्रजरानी है। शोभा उसपर सौ जानसे निसार है, शृंगार उसका गुलाम है, त्रैलोक्यनाथ उसकी आँखोंकी कोरके मुहताज हैं, फिर भी वह तद्गत प्राण है। विरहमें वह करुणाकी मूर्ति है, मिलनमें लीलाका अवतार है। प्रेमीके सामने वह सरल है, गाती है, नाचती है, हिंडोलेपर झूलती है—अपनेको एकदम भूल जाती है। प्रेमकी गम्भीरता आनन्द-किल्लोलसे भर जाती है, पर विरहमें वह गम्भीर है और गोपियोंकी तरह उसमें उतावलापन नहीं रहता। वह सच्ची प्रेमिका है। सूरदासकी राधा तीन लोकसे न्यारी सृष्टि है—अपूर्व, अद्भुत विचित्र।'

राधाके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यका जब हम अध्ययन करते हैं, तब हम पाते हैं कि वैष्णव धर्मके प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीमद्भागवतमें राधाके नामका उल्लेख नहीं है। महाभारत, हरिवंशपुराण, ब्रह्मपुराण तथा विष्णुपुराणमें भी राधाका वर्णन नहीं हुआ है। भासके नाटकोंमें राधाका उल्लेख नहीं है, पंचतन्त्रमें राधाका नाम आया है।

'राधा' नामका उल्लेख सर्वप्रथम हमें पद्मपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण और ब्रह्मवैवर्तपुराणमें मिलता है। वैष्णव आचार्य रूपगोस्वामीके प्रसिद्ध ग्रन्थ उज्ज्वल-नीलमणिमें कहा है कि राधाका नाम पहले 'गान्धर्वी' था, यथा—

गोपालोत्तरतापिन्यां यद् गान्धर्वीति विश्रुता।

कृष्णकी आह्लादिनी शक्तिके रूपमें राधाका चित्रण 'हाल' की 'गाथासप्तशती' में प्राप्त होता है।

'मुखमारुतेन त्वं कृष्ण गोरजो राधिकाया अपनयन् एतासां वल्लभीनामन्यासामपि गौरव हरिस ॥'

हे कृष्ण! तुम अपने मुखमारुतसे राधाके मुखपर लगे गौरवकी अपनयन करके इस दूरीपर खड़े होकर

अभिमान दूर करते हो।

प्राकृत तथा अपभ्रंशके अनेक ग्रन्थोंमें राधाका नामोल्लेख हुआ है, उदाहरणार्थ पुष्पदन्तका उत्तरपुराण, हेमचन्द्रका प्राकृत व्याकरण आदि।

जयदेव और विद्यापतिने काव्यकी दृष्टिसे राधाको कृष्णकी नायिकाके रूपमें चित्रित किया है।

डॉ० शशिदास गुप्तने 'राधा' शब्दकी ज्योतिषीय व्याख्या की है और विशाखा नक्षत्रको ही राधा माना है। डॉ० विजयेन्द्र स्नातकके सूरकी राधाके विषयमें निम्न विचार हैं—'सूरने राधाका आध्यात्मिक चित्रण किया है और अद्वैतकी स्थापना भी। वह स्वकीया है और कृष्णकी अन्तरंग शक्ति ह्लादिनी है। वह परकीया नहीं है। वह मानवती और गौरववती है, कृष्णके दक्षिण नायक होते हुए भी अनन्यभावसे उनका ध्यान करती है। मानके साथ वह खण्डित भी है, परंतु उनका मान आशुतोष है। भ्रमरगीतमें वह अन्तर्मुख और शान्त है। यशोदा और गोपियाँ विलाप करती हैं, परंतु राधा गम्भीर और शोकातुर है, नखसे हरिका चित्र उकेरती हुई वह अपना नहीं दूसरोंका सन्देश भेजती है। राधा रससिद्धिकी प्रतीक है।' अतः सूरकाव्यकी प्रमुख नायिका राधा है।

सूरकी राधापर ब्रह्मवैवर्तपुराण, जयदेव, विद्यापति एवं चण्डीदासका प्रभाव है। राधा सूरसागरमें हमारे सम्मुख प्रारम्भमें एक भोली परंतु वाक्पटु युवतीके रूपमें आती है। बालक कृष्ण भौरा-चकडोरी लेकर ब्रज-वीथियोंमें निकलते हैं, औचक ही उनकी दृष्टि 'नील बसन फरिया' पहने दिन थोरी, गोरी युवतीपर पड़ती है, प्रथम साक्षात्कारमें ही बालक कृष्ण उस युवती वृषभानु-नन्दिनीपर मोहित हो उठते हैं। दोनोंके नेत्र एक-दूसरेसे मिलते हैं और एक-दूसरेके प्रेममें आबद्ध हो जाते हैं—खेलत हरि निकसे ब्रज-खोरी।

कटि कछनी पीतांबर बाँधे, हाथ लए भौरा, चक, डोरी ॥  
मोर-मुकुट, कुंडल स्रवननि बर, दसन-दमक दामिनि-छबि छोरी।  
गए स्याम रवि-तनया केँ तट, अंग लसति चंदन की खोरी ॥  
औचक ही देखी तहँ राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी।  
नील बसन फरिया-वाँटे पहरे, बना चाँटि सलति झकझाँ

कृष्णने तो हँसकर कुछ कह दिया, परंतु बेचारी राधा पश्चात्ताप करके रह गयी, उनके मुख-मृगसे शब्द ही नहीं निकले। सारतः राधाका चरित्र एक भारतीय नारीका प्रतीक है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदीने 'सूरकी साहित्य साधना' में अन्ततः राधाके सन्दर्भमें लिखा है— 'यह है सूरदासकी राधा। भारतके किसी कविने राधाका वर्णन इस पूर्णताके साथ नहीं किया है। बाल प्रेमकी चंचल लीलाओंकी इस प्रकारकी परिणित सचमुच आश्चर्यजनक है, संयोगकी रसवर्षाके समय जिस तरह प्रेमकी नदी बह रही थी, वियोगकी आँचसे वह प्रेम सान्द्र—गाढ़ हो उठा। सूरदासकी यह दृष्टि अद्वितीय है। विश्व साहित्यमें ऐसी प्रेमिका नहीं है।'

## श्रावणमास और उसके व्रत-पर्वोत्सव

चान्द्रवर्षके अनुसार वर्षका पाँचवाँ मास श्रावणमास कहलाता है। लोकमें इसे 'सावन' भी कहते हैं। यह मास भगवान् शंकरको विशेष प्रिय है, इसलिये इस मासमें आशुतोष भगवान् साम्बसदाशिवकी पूजा-आराधनाका विशेष महत्त्व है। जो प्रतिदिन पूजन न कर सकें, उन्हें सोमवारको शिवपूजा अवश्य करनी चाहिये और व्रत रखना चाहिये। सोमवार भगवान् शंकरका प्रिय दिन है।

श्रावणमें सोमवारका व्रत, प्रदोषव्रत तथा शिवपार्थिव-पूजन परम कल्याणकारी है। सोमवारको यदि प्रदोष पड़ जाय तो वह विशेष फलदायक होता है। व्रतके दिन भगवान् शंकरका षोडशोपचार अथवा पंचोपचार-पूजन, पंचाक्षर-मन्त्रका जप, स्तोत्र-पाठ, अभिषेक आदि विशेष रूपसे करना चाहिये। यह सायंकाल (प्रदोषकालमें) करना विशेष महत्त्वपूर्ण है। दिनभर व्रत रहकर पूजनोपरान्त रात्रिमें एक बार भोजन करे। भोजनमें कुछ लोग एक अन्न खानेका भी नियम रखते हैं अथवा केवल फलाहार करते हैं।

भगवान् शिवका पंचाक्षर मन्त्र 'नमः शिवाय' श्रावणमासमें विशेष रूपसे जपनीय है। ॐकारसे समन्वित होकर यह षडक्षर कहलाता है। श्रावणमासमें लघुरुद्र, महारुद्र तथा अतिरुद्रपाठ करानेका भी विधान है। यजुर्वेदान्तर्गत रुद्राष्टाध्यायीका इसमें विशेष रूपसे पाठ होता है। यह अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा हवनात्मक—तीन रूपोंमें होता है। भगवान् शंकरको जलधारा विशेष प्रिय है, अतः श्रावणमासमें जो वर्षाऋतुका समय है, भगवान् शंकरका अभिषेक तथा बिल्वपत्रोंसे उनका अर्चन किया जाता है। बिल्वपत्र तोड़ते समय वृक्षको प्रणामकर निम्न मन्त्रका उच्चारण करना चाहिये—

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेवप्रियः सदा।

गृह्णामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्॥

(आचारेन्दु)

ऐसे ही शिवाराधनामें भस्म एवं रुद्राक्ष-धारणका भी विशेष महत्त्व है।

श्रावणमासमें जिस प्रकार भगवान् शंकरकी आराधना की जाती है, वैसे ही भगवान् विष्णुकी पूजाके साथ ही उनका दोलारोहणोत्सव तथा झूलनोत्सव भी मनाया जाता है। श्रीराम तथा भगवान् श्रीकृष्णके मन्दिरोंमें भी

विविध प्रकारकी झाँकियाँ सजायी जाती हैं और उत्सव होता है। इस प्रकार सभी प्रकारकी आराधनाओंकी दृष्टिसे श्रावणमासका विशेष महत्त्व है।

श्रावणमासमें जैसे सोमवारव्रतकी महिमा है। वैसे ही मंगलवारको भी व्रत किया जाता है और उनमें शिवप्रिया भगवती मंगलागौरीका पूजन होता है। विशेष रूपसे विवाहके बाद प्रत्येक स्त्रीको चार-पाँच वर्षोंतक यह व्रत करना चाहिये। यह व्रत अखण्ड सौभाग्य तथा पुत्रकी प्राप्तिके लिये किया जाता है। भगवती मंगलागौरीको निम्न मन्त्रसे प्रणाम करना चाहिये—

कुङ्कुमागुरुलिप्ताङ्गं सर्वाभरणभूषिताम्।

नीलकण्ठप्रियां गौरीं वन्देऽहं मङ्गलाह्वयाम्॥

चार वर्षतक लगातार मंगलवारका व्रत करके बादमें उद्यापन करना चाहिये।

श्रावण कृष्ण द्वितीयाको 'अशून्यशयनव्रत' सम्पन्न होता है। इस व्रतसे वैधव्य तथा विधुरत्वका परिहार होता है। इसमें उपवासपूर्वक भगवान् लक्ष्मी-नारायणकी आराधना की जाती है। श्रावण शुक्ल तृतीयाके समान ही श्रावण कृष्ण तृतीया भी 'कजलीतृतीया' कहलाती है। इसे कजलीतीज भी कहते हैं। इस तिथिको श्रावण नक्षत्रमें भगवान् विष्णुका पूजन किया जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेशमें विशेषरूपसे कजली तीज मनानेकी परम्परा है। इसमें 'कजरी' का गायन भी होता है। यह एक प्रकारसे लोकोत्सवपर्व है, इस दिन स्त्रियाँ बड़े समारोहसे मेंहदी लगाती हैं और झूला झूलती हैं। इसी तिथिको 'स्वर्णगौरीव्रत' भी किया जाता है। श्रावण कृष्ण चतुर्थीको 'संकष्ट-चतुर्थीव्रत' होता है। इसमें भगवान् गणेशकी आराधना होती है।

श्रावणकृष्ण सप्तमीको 'शीतलासप्तमीव्रत' होता है तथा शीतलादेवीका पूजन होता है और कथा सुनी जाती है।

श्रावणकृष्णपक्षकी एकादशी 'कामदा एकादशी' के नामसे विख्यात है। इसके माहात्म्यके विषयमें भगवान् श्रीकृष्णने युधिष्ठिरजीको बताया कि इस दिन व्रत करके तुलसीमंजरीसे भगवान् विष्णुका पूजन करना चाहिये, इससे सभी प्रकारके अभीष्ट प्रयोजनोंकी सिद्धि होती है।

श्रावणशुक्लपक्ष पर्वोत्सवोंकी दृष्टिसे विशेष महिमामय है। श्रावणशुक्ल तृतीयाको 'तीज' का मुख्य पर्व होता है।





## ‘सुख’ सम्पन्नताका मोहताज नहीं

( श्रीताराचन्द्रजी आहूजा )

धर्मशास्त्रोंमें कहा गया है कि मनुष्य-शरीर सर्वेश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है। भगवान्ने मनुष्यको दस इन्द्रियाँ, एक मन और बुद्धि देकर सर्वगुणसम्पन्न बनाया है। फिर भी बहुतेरे लोग यह मानते हैं कि मनुष्य धन, सम्पत्ति और वैभवादिसे ही सम्पन्न बनता है और इनके अभावमें वह दरिद्रताका दंश ही झेलता है। दूसरी ओर संत स्वभाववाले लोग संतोषको ही परमधनकी संज्ञा देते हैं। संतप्रवर श्रीकबीरदासजी तो यहाँतक कहते हैं कि मनुष्यके पास जब सन्तोषरूपी सम्पदाका आविर्भाव होता है, तब सब प्रकारके धन धूलके समान हो जाते हैं अर्थात् सन्तोष सबसे बड़ा धन है, जिसके मिलनेपर किसी धनको प्राप्त करना शेष नहीं रहता—

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान।

जब आवे संतोष धन तो सब धन धूरि समान॥

आज चारों ओर अशान्तिकी ज्वाला धधक रही है। हर आदमी अशान्त नजर आता है; क्योंकि वह निरन्तर किसी-न-किसी वस्तु अथवा परिस्थितिका अभाव अनुभव कर रहा है। यह एक विडम्बना ही कही जायगी कि सब कुछ होते हुए भी एक अजीब तरहका अभाव मनुष्यको घेरे हुए है। कोई भी व्यक्ति पूरी तरह संतुष्ट नजर नहीं आता। किसीसे भी बात करके देख लो, हमें यही सुननेको मिलेगा कि बाकी सब तो ठीक है, बस एक अमुक चीजकी कमी है। यह भी देखनेको मिलता है कि सम्पन्नतामें जीवन जीनेवाला व्यक्ति अधिक दुखी है और विपन्नतामें जीवन व्यतीत करनेवाले लोग अपेक्षाकृत कम दुखी हैं। सम्पन्न लोग परिस्थितियोंका रोना अधिक रोते हैं जबकि विपन्नतामें जीनेवाला प्राणी शिकायत कम करता है। वह अपना जीवन अव्यक्त शक्तिके प्रति आस्थावान् होकर बिताता है और अपने कार्यमें मग्न रहता है।

इस बातको एक उदाहरणद्वारा समझा जा सकता है। लगभग एक दशक पूर्व एक सत्संगमें स्वामी रामसुखदासजी अपना अनुभव बताते हुए कह रहे थे

कि वे एक बार जाने-माने उद्योगपतिके साथ किसी कार्यक्रममें जा रहे थे। मार्गमें एक व्यक्ति लेटा हुआ था। कारके चालकने तेज हॉर्न बजाया परंतु उस व्यक्तिकी नींद नहीं टूटी। पास पहुँचकर चालकने कार रोकी, फिर उतरकर उसे जगाया। उद्योगपतिने यह दृश्य देखकर कहा—‘स्वामीजी! मुझे इस व्यक्तिसे ईर्ष्या हो रही है।’ मैंने पूछा—‘इस बेचारे मजदूरसे आपकी ईर्ष्याका क्या कारण हो सकता है!’ उन्होंने कहा—‘स्वामीजी! आपके आशीर्वादसे घरमें सब प्रकारकी सुविधा है। सोनेके लिये पलंगपर मखमली गद्दा है, पर नींदकी गोली लेता हूँ फिर भी निगोड़ी नींद आनेका नाम नहीं लेती और इसे देखिये, इस कोलाहलभरे रास्तेमें कंकड़-पत्थरोंके बीच जमीनपर इतनी मीठी गहरी नींदमें सो रहा है। आप ही बतायें कि शान्तिभरी निद्राके लिये सम्पन्नता और पैसा कब काम आया?’

यह एक कड़वी सच्चाई है कि सम्पन्नताके बावजूद भोजन और नींद, इन दोनोंके आगे मनुष्य विवश हो जाता है। इससे मनुष्यका यह भ्रम टूट जाता है कि धन-वैभवमें सुख है। हम देखते हैं कि साधु-संत-मुनिजन सब धन-वैभवको छोड़कर अपनी चेतनाको विराट् चेतनासे जोड़ते हुए सुखकी अनुभूति करते हैं। अभावमें जीनेवालेको कठिनाई अवश्य होती है, परंतु जिसे अभाव नहीं है, वह सुखी रहता है भगवान्की रजामें रहकर और संतोषपूर्वक जीवन जीकर। दूसरी ओर सम्पन्न लोग चिन्तातुर दिखायी देते हैं; किसीको जमकर भूख नहीं लगती तो किसीको गहरी और मीठी नींद नहीं आती। किसीको संतान न होनेका दुःख सता रहा है तो किसीकी बिगड़ैल संतानने जीना हराम कर रखा है। वे सोचते हैं कि इससे अच्छा तो हमारे संतान ही नहीं होती। गुरुवाणी कहती है—

बड़े-बड़े जो दीखें लोग। तिनको व्यापै चिन्ता रोग॥

कहनेका तात्पर्य है कि मनुष्यकी यह प्रवृत्ति है कि वह कभी किसी भी परिस्थितिसँतुष्ट नहीं होता।

भारतकी प्रसिद्ध आईटी कम्पनीके मालिक अपने कार्यालय जानेके लिये ऑटो रिक्शाका इस्तेमाल करते हैं। वे प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयोंका दान करते हैं पर अपनेपर कुछ खर्च करना उन्हें पसन्द नहीं है। एक अन्य जानी-मानी कम्पनी एप्पलके सीईओ टिम कुक २४०० करोड़ रुपयेके मालिक हैं, पर फिजूलखर्ची कतई नहीं करते। अमेरिकामें इनका घर मात्र २०९५ स्क्वायर फीटमें है। वे कहते हैं कि मैं अपनी पहचान साधारण रहन-सहनसे बनाना चाहता हूँ। वहीं दुनियाकी एक प्रसिद्ध कम्पनी टम्बलरके संस्थापक डेविड कार्पके रहन-सहनको देखकर कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता कि वे अरबपति हैं। वे विलासितावाली वस्तुओंका उपभोग नहीं करते और अपनी आवश्यकताओंको न्यूनतम रखनेमें विश्वास करते हैं। इन सब धनी व्यक्तियोंकी जीवन-शैलीसे यह बात तो प्रमाणित होती ही है कि 'सुख' सम्पन्नताका मोहताज नहीं है। वह हमारी सोच और सन्तुष्टिका हमराही है।

[illegible]

**दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ और पूर्णब्रह्म श्रीरामभद्र**

( श्रीनिमाङ्गचरणजी मिश्र )

दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ अनन्तकोटि ब्रह्माण्डोंके अधिष्ठान स्वप्रकाश परमात्मा परब्रह्म-स्वरूप हैं। वे ही वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्यादि सभीके परमाराध्य एवं सर्वोपरि सनातन धर्मके प्राणकेन्द्र हैं।

पुरुषोत्तम-क्षेत्र अथवा नीलाचल-क्षेत्र सृष्टि, स्थिति तथा संहारका मूलायतन है, आधार-क्षेत्र है। इस क्षेत्रका आकार शंखके समान है, इसलिये यह शंख-क्षेत्र भी कहलाता है। सृष्टिके प्रारम्भमें सर्वप्रथम स्वयं नारायण साकार-रूप धारण करनेकी इच्छासे श्रीजगन्नाथजीके रूपमें यहीं आविर्भूत हुए।

इस क्षेत्रमें महान् वैष्णव भक्त महाराज इन्द्रद्युम्नकी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर नीलमेघके समान श्यामसुन्दर



शंखचक्रधारी भगवान् काष्ठमय शरीर धारण करके सम्पूर्ण लोकोंका उपकार करनेके लिये नीलाचलकी गुफामें विराजमान रहते हैं। करुणासागर भगवान् जनार्दन काष्ठनिर्मित बलभद्र, सुभद्रा तथा सुदर्शनचक्रकी प्रतिमाओंके साथ स्वयं भी दारुमय विग्रह धारण करके जगत्का कल्याण करते हैं। उनका दर्शन करके मनुष्य पापोंके सुदृढ़ बन्धनसे भी मुक्त हो जाता है। भगवान्के पादपद्म समस्त चराचर जगत्के लिये वन्दनीय हैं। वे सबके आश्रय हैं। वे चेष्टारहित काष्ठशरीर धारण करके भी दिव्य लीलाविलास करनेवाले हैं।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणमें श्रीजगन्नाथजीको श्रीरामावताररूपमें स्वीकार किया गया है—

प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम् ।

कौसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम् ॥

(वा० रा० १।१८।१०)

कौसल्यादेवीने सर्वलोकवन्दित श्रीजगन्नाथजीको दिव्य लक्षणोंसे युक्त श्रीराम-रूपमें जन्म दिया। वहीं पुनः वर्णन आया है कि जब अयोध्यापति श्रीरामचन्द्रने लीला-संवरणकर परमधाम-गमनका निश्चय किया तब विभीषणादि भक्तगणोंने भगवान्से कहा—‘हे प्रभो! आपकी अनुपस्थितिमें हम किसकी आराधना करेंगे?’ तब कृपावतार पूर्णब्रह्म प्रभु श्रीरामने उन्हें अन्तिम उपदेश देकर कहा—

किं चान्यद् वक्तुमिच्छामि राक्षसेन्द्र महाबल ।

आराधय जगन्नाथमिक्ष्वाकुकुलदैवतम् ॥

आराधनीयमनिशं देवैरपि सवासवैः ।

(वा० रा० ७।१०८।३०-३१)

‘हे महाबली राक्षसराज विभीषण! मैं आप सबको अधिक क्या कहूँ? हमारे इक्ष्वाकुकुलके कुलदेवता भगवान् श्रीजगन्नाथ हैं। इन्द्र आदि सकल देवता भी सर्वदा उनकी आराधना करते रहते हैं। आप भी सदा-सर्वदा श्रीजगन्नाथजीकी आराधना करते रहें।’

श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमें विभीषणजीद्वारा की गयी श्रीजगन्नाथ-आराधनाकी परम्परा आज भी प्रचलित है। रथयात्राके दिन रथारोहणके समय विभीषणको दर्शन देनेके लिये स्वयं श्रीपति प्रभु दक्षिणाभिमुख होकर रथारोहण करते हैं।

वामदेवसंहितामें कहा गया है कि मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामभद्र जब अपनी लीला समाप्त करके सरयूनदीके किनारेपर परम शान्त होकर स्थित थे, उस समय

सीता सुभद्रा ये बेनि अटन्ति संयात ॥





( श्रीसूदर्शनसिंहजी 'चक्र' )

मुझे आपत्ति नहीं है, लेकिन आश्रयदाता सिरपर बैठाकर तो रखेगा नहीं। वह डाँटेगा, तिरस्कार करेगा और भगवान् ने स्वभाव ऐसा दे दिया कि किसीकी आधी बात सही नहीं जाती। वे सम्बन्धी थे, बड़े थे, विद्वान् थे। उन्होंने डाँट दिया तो क्या हो गया? समझता हूँ यह सब; किंतु सहन जो नहीं होता। उनसे झगड़कर आया हूँ। अब वहाँ जाना तो सम्भव नहीं है।

केवल छः पैसे पास थे। तीन दिन चने चबाकर काट दिये। अब! गरमीके दिन हैं। कहीं वृक्षके नीचे पड़ा रहा जा सकता है। घरके नामपर तो खण्डहर भी नहीं है। करूँ क्या! रोजी-रोजगार कुछ चाहिये पेटके गड़ुकेको भरनेके लिये। व्यापारके लिये पूँजी न हो तो परिचय अवश्य चाहिये। वह कहाँसे आये? नौकरी! लेकिन अठारह वर्षके केवल साधारण हिन्दी पढ़े लड़केको जो नौकरी मिलेगी, उसमें नौकरका अपमान न हो, हो सकता है? अपमान तो होगा ही। वह सहा जायगा?

एक उपाय सूझता है—किसी साधुका शिष्य बना जा सकता है, लेकिन यदि वहाँ न टिक सका, वहाँ भी अपमान मिला तो ? भिक्षा माँगी जा सकेगी ? नहीं, यह करनेकी अपेक्षा उपवास करके मर जाना सरल है।

इधर आठ दिनसे आम खाकर आनन्दसे रहा हूँ।  
 वृक्षोंपर चढ़ा न जाय, पत्थर न मारे जायँ तो अपने आप  
 टपके, आँधीसे गिरे आम उठाकर ले लेनेमें कोई  
 बगीचेका रक्षक बाधा नहीं देता। अब जबतक आमका  
 मौसम है, पेट पालनेकी चिन्ता तो गयी।

कल मिला वह साधु गँजेड़ी था। उसका प्रलोभन व्यर्थ था। मैं ऐसे व्यक्तिका न शिष्य बन सकता, न उसकी सेवा कर सकता। लेकिन उसकी एक बात ठीक थी कि मन्त्रानुष्ठानके बिना सिद्धि नहीं मिल सकती।





गया है। मुहूर्त इन्होंने निकाल दिया है। बिना दीक्षाके मन्त्र सप्राण नहीं होता और दीक्षा लेना है एक साधुसे। जबसे आसामके उस तान्त्रिकका सम्पर्क मिला, साधुमात्रसे मुझे घृणा हो गयी है। साधुओंसे भय लगता है। लेकिन साधुने दीक्षा देना स्वीकार कर लिया है। दूसरा कोई मार्ग दीखता नहीं है।

× × ×

आज पूरे पन्द्रह वर्ष हो चुके। मेरा अनुष्ठान क्यों फलप्रद नहीं हो रहा है? मैंने कहीं प्रमाद किया हो, स्मरण नहीं आता। यह पर्वतीय प्रदेश पुण्यभूमि है। यहाँके ग्रामजन श्रद्धालु हैं और उनके इतने श्रमसे उपार्जित, श्रद्धार्पित आहारमें अन्नदोष भी सम्भव नहीं है। इनका श्रम ईमानदारीका यह पवित्र उपार्जन—तब दोष कहाँ है?

मैं आठ पुरश्चरण पूरे कर चुका हूँ। त्रिकाल-स्नान, एकाहार, लगभग चौदह घण्टे प्रतिदिनकी साधना क्या थोड़ी होती है? प्रथम पुरश्चरणके पश्चात् तो मुझे अब अपना आसन भी मध्यमें परिवर्तित नहीं करना पड़ता। मैं अभ्यस्त हो चुका हूँ स्थिर बैठे रहनेका।

शुद्ध पवित्र देश, पवित्र आहार, प्रमादरहित अनवरत साधन और कोई आचार-दोष नहीं; किंतु मेरा मन्त्र उज्जीवित क्यों नहीं होता? मन्त्र-देवताने अबतक मुझे दर्शन देनेकी कृपा क्यों नहीं की? कहाँ त्रुटि है मेरे साधनमें?

मन्त्रशास्त्र सत्य नहीं है—ऐसी बात मेरा हृदय स्वीकार नहीं करता। मैं अपने मन्त्रका प्लावन, ताडन, दाहनादि सप्त संस्कार भी सम्पन्न कर चुका। अब लौटना पड़ेगा मुझे। यदि वे परमोदार विद्वान् जीवित हों—दूसरा कोई मुझे दीख नहीं पड़ता।

× × ×

बड़ा संकोच हुआ यहाँ आकर। मैं इन अतिशय वृद्ध एवं विद्वान्को कैसे बतलाऊँ कि केवल केशोंकी जटा बन जाने तथा दाढ़ी बढ़नेसे मैं उनका प्रणम्य नहीं हूँ। कितने श्रद्धालु और उदार हैं ये।

‘अश्रद्धया हतो मन्त्रो व्यग्रचित्तो हतो जपः।’

आज यह सूत्र सुना दिया इन्होंने। मन्त्रमें श्रद्धा न हो—वह निश्चय फलप्रद होगा, ऐसी दृढ़ आस्था न हो तो मन्त्र अपनी शक्ति प्रकट नहीं करता; किंतु मेरी श्रद्धा तो शिथिल कभी नहीं हुई। बिना श्रद्धाके कोई दीर्घकालतक इतना श्रम कर सकता है?

एक बात मुझे स्वीकार है—मैं बहुत त्वरापूर्वक मन्त्रोच्चारण करता हूँ। मन्त्र-संख्या पूर्ण करनेपर मेरा ध्यान विशेष रहता है। मेरा चित्त, पता नहीं कहाँ-कहाँ जाता रहता है। स्थिर चित्तसे, स्वस्थ गतिसे, मन्त्रार्थ चिन्तनपूर्वक जप मैंने नहीं किया है।

यहाँ भी गंगातट है। पण्डितजीका सांनिध्य है। जनपदसे बाहर एकान्तमें एक झोंपड़ीकी व्यवस्था वे कल कर देनेको कहते हैं। अब एक पुरश्चरण यहीं करना उचित होगा।

× × ×

मुझे चिन्ता नहीं है कि दो वर्षके स्थानपर ढाई वर्ष इस पुरश्चरणमें लगे हैं। मुझसे अधिक चिन्ता तथा निराशा तो पण्डितजीको मेरी असफलतासे हुई है। वे इन ढाई वर्षोंमें मेरे संरक्षक, निरीक्षक, प्रतिपालक सभी रहे हैं। कितने खिन्न गये हैं आज वे यहाँसे। उनके वे भरे-भरे नेत्र, कान्तिहीन मुख—बिना कुछ कहे वे यहाँसे लौट गये हैं। उनके लिये मनमें चिन्ता हो गयी है।

× × ×

पण्डितजी तो यहाँसे जाकर सीधे अपने उपासना-कक्षमें बैठ गये हैं। उनका पूरा परिवार चिन्तित है। उन्होंने अन्न-जल कुछ नहीं लिया सायंकालतक। अजस्र अश्रु झर रहे हैं उनके नेत्रोंसे। किसीकी ओर दृष्टि उठाकर वे नहीं देखते हैं। कोई संकेत नहीं किया उन्होंने मेरे वहाँ जानेपर भी।

‘हे प्रभो! हे दयामय! उन वृद्धपर दया करो! मुझे इन विप्रको पीड़ा पहुँचानेके पापसे बचाओ!’

× × ×

आज प्रातःकाल ही पण्डितजी आ गये थे। कितने प्रसन्न थे वे। ‘आप मेरे अनुरोधको स्वीकार करके एक पुरश्चरण और कर लें!’ कितना आग्रह था उनके स्वरोमें। मैं तो निराश हो चुका था; किंतु उनका इतना आग्रह है तो दो-ढाई वर्ष और सही। जीवनमें अब कुछ करना भी तो नहीं है। इतने दिनोंके अभ्यासने ऐसा बना दिया है कि जिह्वा मन्त्र-जप किये बिना मानती नहीं है। अब कोई कामना भी तो नहीं रही। मन्त्रदेवताका साक्षात्कार—लेकिन किसलिये? एक कुतूहलमात्र लगता है। मैं क्या माँगूँगा? मनमें ढूँढ़कर भी कुछ पाता नहीं हूँ।

वे कह गये हैं—‘आज अच्छा दिन नहीं है। कल शेष विचार करूँगा।’ आज वे श्रान्त भी बहुत थे। कल अहर्निश निर्जल व्रत किया उन्होंने। उनका वृद्ध शरीर, व्रत और रात्रि-जागरण उनको थका तो देगा ही। आज उनके लिये विश्राम आवश्यक था।

× × ×

आज पण्डितजीने एक अपरिचित तथ्य प्रकट किया है। ‘मन्त्र-साधन त्रिपाद होता है। मन्त्र, मन्त्रदेवता (इष्ट) तथा गुरुमें दृढ़ श्रद्धा—इस साधनके चरण हैं। एक भी चरण भंग हो तो साधन पंगु होकर असफल हो जाता है।’

मन्त्र और इष्टमें मेरी श्रद्धा कभी शिथिल नहीं हुई; किंतु मन्त्रदाता उन साधुमें मेरी श्रद्धा प्रारम्भमें ही नहीं थी। पण्डितजी कहते हैं—‘गुरुका देह एवं दैहिक व्यापार दृष्टि देनेकी वस्तु नहीं। वह तो चिन्मय वपु मन्त्र-देवताका स्वरूप है। गुरु-देह तो इष्टका पीठ है। मन्त्र-दीक्षा, नाद-परम्परा बीज जहाँसे प्राप्त हुआ, उस उद्गममें श्रद्धा शिथिल हो जायगी तो मन्त्रका शक्तिप्रवाह बाधित हो जायगा।’

‘अब उनका शरीर तो रहा नहीं। आप उनके आश्रममें अनुष्ठान करें। उनकी पादुकाएँ वहाँ हैं। उनका पूजन प्रतिदिन करते रहें।’ पण्डितजीने यह बात अपनी

ओपसे नहीं करी है। उन्होंने मुझे बताया नहीं किंतु इसके आगेके पक्ष पढ़नेयोग्य स्थितिमें नहीं थे।

लगता है कि कल अपने आराध्यकक्षमें उन्हें इस आदेशका आभास हुआ है।

वह शत-शत चन्द्रोज्ज्वल दिव्य ज्योति—अब भी उसके स्मरणसे देहका कण-कण आनन्दविभोर हो उठता है। मैं पादुका-पूजन करके प्रणत हुआ और सम्पूर्ण स्थान उस स्निग्धोज्ज्वल प्रकाशसे परिपूर्ण हो गया।

मन्त्रका वह अकल्पनीय सुधा-संगीत जो उस प्रकाश-राशिसे ही झर रहा था, प्राणोंको सिंचित कर रहा था। मैंने मस्तक उठाया और कबतक मैं मुग्ध, आत्मविस्मृत देखता रहा, मुझे कुछ पता नहीं है। ज्योतिर्मय मन्त्राक्षर और उन्होंने नृत्य करते मानो एक मूर्ति बनायी। किसकी मूर्ति—कहना कठिन है। चन्द्रमौलि, गंगाधर, नीलकण्ठ, त्रिलोचन, भस्मांगभूषित, सर्पसज्जित मेरे मन्त्रदेवता भगवान् शिव और मेरे मन्त्रदाता जटाजूटधारी वे साधु क्षणार्धमें एक और क्षणार्धमें दूसरी मूर्तिमें वह प्रकाश परिवर्तित होता रहा।

‘वरं ब्रूहि!’ जब सुनायी पड़ा, मैं किंचित् सावधान हुआ। मैं क्या माँगता, पूरे अनुष्ठान-कालमें जो सोचनेपर मनमें नहीं आया, सहसा मुखसे निकल गया—‘देव! यह शिशु अज्ञ है। जो आपको परम प्रिय हो, वही दें आप!’  
.....यहाँ अक्षर मिट गये हैं।

मेरे वे परम श्रद्धेय आज नहीं रहे। श्मशानकी चिताग्निमें उनके शरीरकी आहुतिका साक्षी रहा मैं। साक्षी ही तो—मुझे इधर कोई सुख-दुःख स्पर्श कहाँ करते हैं। मैं—पर मैं कौन? मेरा पांचभौतिक देह क्या हुआ? यह मन्त्राक्षरोंका कण-कण घनीभाव और यह नीलसुन्दर मयूर-मुकुटी—यह आनन्दका उल्लसित सागर, किसने सोचा था कि यह वरदानमें मिला करता है।

मुझे अब हिमालयकी ओर जाना है। हिमालय.....

## मधुराद्वैताचार्य संत श्रीगुलाबरावजी महाराज

( डॉ० श्रीअरविन्द स० जोशी मेहेकर )

बीसवीं शतीमें एक विलक्षण विद्वान् महात्माने महाराष्ट्रमें जन्म लेकर भारतीय-संस्कृति और धर्मके प्रचारमें आश्चर्यजनक कार्योंसे लोगोंका विशेष कल्याण किया।

### बचपनमें ही कृष्ण-दर्शन

इन महान् महापुरुषका नाम मधुराद्वैताचार्य

कतिपय जन्मोंकी तपस्याके बाद ही प्राप्त होनेवाला भगवन्तका सगुण साक्षात्कार इस महापुरुषको बाल्य-दशासे ही सहजतासे प्राप्त था। सच्चिदानन्दधन कृष्ण-मूर्तिके साथ वे उछलते, नाचते, हँसते और खेलते थे। रातके समय अन्दरसे कमरा बन्दकर ब्रह्मानन्दमें तल्लीन होकर वे नाचते, गाते और भजन करते रहते।

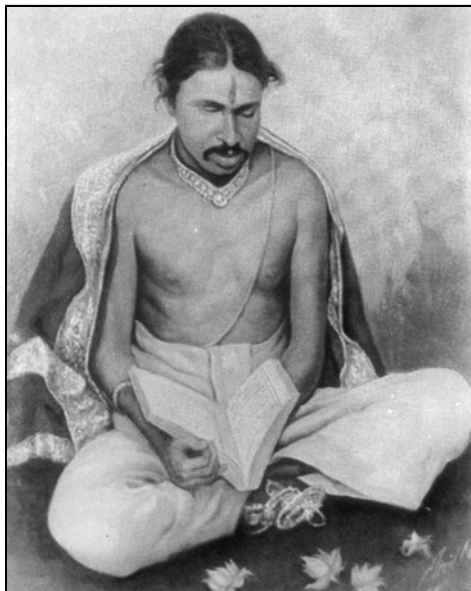
### अलौकिक बाललीला

घरमें छीकेपर रखी हुई खानेकी चीज मटकाना (उतार लेना), अपने साथियोंके साथ हास्य-विनोद करना, परिचितोंके साथ प्यारसे दिल्लगी करना इत्यादि लीलासे वे सबका चित्त आकर्षित कर लेते थे। गाँवमें इस अद्भुत बालककी अलौकिक लीलाके कारण ये सभीके लाड़ले बन गये थे। इनके पड़ोसकी स्त्रियाँ यह बालक्रीड़ा देखनेको जब चुपचाप आकर खड़ी हो जाती थीं, तो वे सबका नाम एकके-बाद-एक तुरन्त बता देते थे। 'बिना हमें देखे और सुने आपने कैसे हमें पहचाना?' ऐसा पूछनेपर ये कहते थे—'आपकी पहनी हुई बिछुआ और कंगनके नादसे मैं नाम जान लेता हूँ।'

एक बार उनके हाथसे दिवालगिरी गिर पड़ी। चारपाईपर पड़ी चद्दर, नानीकी साड़ी जलने लगी। क्रोधाविष्ट होकर उनकी नानी उन्हें मारने दौड़ी, तब वे निश्चल रहकर निश्चयपूर्वक बोले—'तू चिन्ता मत कर, केवल तेल ही जलेगा, कपड़ा जैसे-का-वैसा रहेगा।' और हुआ यही! उनके वचनके अनुसार तेल जल गया, कपड़ा ज्यों-का-त्यों रह गया। इसे देखकर सभी अवाक् हो गये।

### ऊह ( तर्क ) सामर्थ्यसे सभी शास्त्रोंमें सर्वज्ञ

करीब दस सालतक अपने नानाके यहाँ लोणी ग्राममें सुखद कालयापन करके ये अपने पिताजीके माघान गाँवमें लौट आये। सापत्न माताके कारण यहाँ इन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा। अन्धत्वके कारण किसी शालामें जाकर शिक्षा ग्रहण करना सुगम नहीं था, परंतु इन्होंने अनेक धार्मिक



श्रीगुलाबराव महाराज था। महाराष्ट्रके अमरावती जिलेमें लोणी-जैसे छोटे-से ग्राममें ९ जुलाई सन् १८८१ ई० आषाढ़ शुक्ल दशमीको अवतीर्ण हुए। माँका प्रेमच्छत्र बचपनमें ही बिछुड़ गया और उनकी लौकिक दृष्टि नवें माहमें ही चली गयी। बाह्य दृष्टिके हमेशाके लिये चले जानेपर भी आन्तर प्रज्ञाचक्षुत्व सदाके लिये खुल गया। वस्तुतः लौकिक जगत्-दृष्टि तो इनके लिये अन्धकारमय हो गयी, लेकिन लौकिक आत्म-प्रकाश जगमगाकर दिव्य तेजोवलयके रूपमें उनके अंग-प्रत्यंगसे दीप्तिमान् हो उठा। बचपनसे ही योगविद्यामें उनका असाधारण अधिकार प्रतीत होने लगा। कभी वे घण्टों समाधि लगाकर देहभाव खोकर बैठे रहते तो कभी बालकृष्णको अपने साथ बुलाकर उन्हें खाना खानेको विवश करते।



पूनासे बारह मीलकी दूरीपर प्राचीन आलन्दी क्षेत्रमें करीब ७०० वर्षोंपूर्व संतसम्राट् श्रीज्ञानेश्वरमहाराजने साक्षात् श्रीविठ्ठल-रुक्मिणी माँकी उपस्थितिमें संजीवन समाधि ली थी। आज भी साधकको उनके द्वारा मार्गदर्शन और संतोंको उनका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। श्रीगुलाबराव महाराजको उन्होंने बड़े प्यारसे अपने गोदमें लेकर स्वनामका मन्त्र (ज्ञानेश्वर माऊली) देकर अनुगृहीत किया था। संतश्रेष्ठ श्रीज्ञानेश्वरमहाराज-जैसे सद्गुरुकी प्राप्ति होते ही उनका व्यक्तित्व निखर उठा। इस गुरुदीक्षाके बाद उनका साम्प्रदायिक नाम था श्रीपाण्डुरंग महाराज। श्रीज्ञानेश्वर महाराजको अपनी जन्नी और श्रीकृष्ण गणपतिकाको अपना गति मानकर

### ज्ञानसूर्यका अस्त

बचपन-से-जो-अपार-कष्ट-उन्होंने-झेले, उस-से-श्रीमहाराज-की-प्रकृति-उमर-से-ही-क्षीण-हो-गयी-थी। वैसे-उनकी-देह-यष्टि-बहुत-सुन्दर-और-सुदृढ़-थी। बादल-जैसा-साँवला-रंग, छः-फुट-ऊँचाई, तेजः-पुंज-शरीर,

आजानुबाहु, लम्बे, कुरले-केश—इस-प्रकार-उनका-बहुत-आकर्षक-रूप-था। शास्त्रानुसार-दैनिक-आचरण-रखने-का-उनका-नियम-था। मल-मूत्र-त्यागने-के-बाद-वे-जल-और-मिट्टी-से-हाथ-पाँव-इतने-बार-धोते, जिसके-कारण-उनके-हाथ-पर-फोड़े-आ-गये-थे। विद्या-व्यासंग-और-धर्म-प्रसार-के-कार्य-में-खाने-की-या-नींद-की-उन्होंने-परवा-नहीं-की। प्रकृतितः-अस्वस्थ-उसका-स्वाभाविक-परिणाम-था।

अन्तकाल-में-वे-अपने-सद्गुरु-के-निकट-पूना-में-जा-ठहरे। तत्कालीन-सुप्रसिद्ध-वैद्य-महर्षि-अण्णासाहेब-पटवर्धन-जीने-उपचार-किया। लेकिन-सब-प्रयत्न-असफल-रहे। २०-सेप्टेंबर-सन्-१९१५-ई० (भाद्रपद-शुक्ल-द्वादशी)—को-सूर्योदय-की-मंगल-वेला-में-इस-ज्ञानसूर्य-का-अस्त-हुआ-और-सब-भक्त-गण-दुःखान्धकार-में-डूब-गये।

काशी-के-सुप्रसिद्ध-कैवल्य-धाम-के-आचार्य-श्रीकृष्णानन्द-सरस्वती-जब-महाराज-से-मिलने-आये-और-उनके-साथ-तीन-दिन-रहे, तब-महाराज-से-ही-कहने-लगे-कि-'सत्य-से-विमुख-न-होते-हुए-जगत्-के-कार्य-करने-वाले-श्रीकृष्ण-तथा-नारद-ही-ऐसे-दो-व्यक्ति-इतिहास-प्रसिद्ध-थे, परंतु-आज-तीसरे-दीख-रहे-हैं।' प्रयाग-के-पण्डित-आदित्यराम-भट्टाचार्य-ने-इन्हें-बाल-बृहस्पति-कहकर, आधुनिक-आंग्ल-विद्या-विभूषित-विद्वानों-के-लिये-एक-Intellectual Phenomena-के-रूप-में-वर्णित-किया।

जीवन्मुक्ति-प्राप्त-करने-के-लिये-प्राचीन-ऋषियों-के-मतानुसार-भक्ति-ही-एक-विशिष्ट-साधन-है-और-इसी-मत-का-प्रचार-करने-की-इच्छा-से-महाराज-ने-कर्म, ज्ञान-और-उपासना-का-स्वतः-आचरण-किया-और-नाना-ग्रन्थों-का-प्रयत्नपूर्वक-लेखन-कराया। ज्ञानियों-के-लिये-पूर्ण-ज्ञान-सम्पादन-करने-के-पश्चात्-भक्तिकी-आवश्यकता-को-प्राचीन-ऋषि, मुनि, भक्त्याचार्य-तथा-आद्य-श्रीशंकराचार्य-एवं-अर्वाचीन-संतों-ने-भी-प्रतिपादित-किया-है। इसी-को-शास्त्रीय-स्वरूप-देकर-तथा-वेदान्त-शास्त्र-के-साथ-भक्तिका-समन्वयकर-'मधुराद्वैत-दर्शन' इस-नाम-में-श्रीगुलाबराव-महाराज-ने-अपना-मत-प्रकट-किया-है।

श्रीमहाराज-जी-के-एक-दोहे-में-दिया-हुआ-उदार-आश्वासन-ही-हमारे-जीवन-का-अब-आधार-है—

बड़े-प्रेम-से-एक-घड़ी-खड़ा-सद्गुरु-द्वारा।

तिसका-चारो-मुक्ती-करत-निःसाधन-हि-स्विकार॥

## रूप-स्मरणका प्रभाव

[ रावण-कुम्भकर्ण-संवाद ]

( आचार्य श्रीरामरंगजी )

अनेकानेक रक्ष-सुभटोंके रणभूमिमें सो जानेके कारण हताश होकर रावणने कुम्भकर्णको जगानेका विचार किया। अनेक प्रकारके उपायोंद्वारा उसे जगाया। जागते ही उसने पूछा कि 'आजतक उसे कभी भी नहीं जगाया गया था तो फिर आज ऐसी कौन-सी समस्या आ गयी कि उसे उठानेकी आवश्यकता आ गयी?' रावणने सीताहरण-लंकादहन-समुद्रपर सेतु निर्माणकर श्रीरामके लंका-आगमनका वर्णन करते हुए बताया कि 'अक्षयकुमार-प्रहस्त-अकंपन-अतिकाय-देवांतक-नरांतक-मकराक्ष आदि सहित खर-दूषण भी वीरगतिको प्राप्त हो चुके हैं। अब लंकाके गौरवकी रक्षा वीरवर! तुम्हारे पराक्रमके अधीन है।'

कुम्भकर्णने उसकी भर्त्सना करते हुए कहा कि 'सीता जगदम्बा है। उसका हरणकर तुमने उचित नहीं किया। किंतु अनुचित भी कैसे कहूँ? देवर्षि नारद मुझे, हमारे अन्तका कारण जो वर्षों पूर्व बता चुके थे, वह असत्य नहीं था। उसे सत्य सिद्ध करनेके तुम साधन बने। बनने ही थे। बन गये।'

रावण जानता था कि यदि उसने सीताको लौटानेका प्रस्ताव रख दिया तो समस्या हो जायगी। कुम्भकर्ण विभीषण-जैसा सज्जन तो नहीं था कि उसे भी लात मारकर निकाल देता। वह कुम्भकर्णके चरित्रकी दुर्बलता जानता था। एक संकेतपर मदिराके घड़े-के-घड़े, विभिन्न प्रकारके मांसोंके भार-के-भार आने लगे। कुम्भकर्ण खा-पीकर रणरंगमें रँगने लगा। इस स्थितिमें उसने पूछा कि 'सखे! तुमने जिस कारण जानकीका हरण किया, उसका उपभोग भी किया कि नहीं?'

रावणने उत्तर दिया कि 'समस्त प्रकारके लोभ-लालच, भय आदि दिखाकर थक चुका हूँ, परंतु वह मेरी ओर देखनेके भी तैयार नहीं है।'

मदकी मादकतामें धुत कुम्भकर्ण बोला, 'अरे राक्षसराज! तुम तो मायावी हो। एक बार रामका रूप रखकर चले जाते। काम बन जाता।'

रावण बोला, 'अरे मित्र! सखे! मैंने यह भी विचार किया था। किंतु रामका रूप धारण करनेके लिये जैसे ही मैं रामरूपका ध्यान करता हूँ कि मेरे मनकी समस्त कलुषित भावना नष्ट हो जाती है। मैं प्रत्येक स्त्रीमें अपनी माताके दर्शन करने लगता हूँ। स्वयंसे लज्जित होकर बैठ जाता हूँ।'

—कहकर रावण मौन हो गया। मदमत्त कुम्भकर्णकी वाणी अत्यधिक मदिरापानके कारण लड़खड़ाने लगी। उसी अवस्थामें वह एक-एक शब्दको खींचता हुआ—सा बोलने लगा, 'भ...इ...या, लं...के...श्व...र! उ...ठो, इ...स...अ...प...ने...अ...नु...ज... को... अं...तिम...हां... अंतिम आलिंगन दो। विदा...विदा...करो।'

प्रत्युत्तरमें रावणके 'विजयी भव' शब्दोंका अट्टहासके रूपमें उपहास उड़ाता हुआ कुम्भकर्ण मद्य-पात्रोंको ठुकराता हुआ, प्रभुके हाथोंसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिये राक्षसी स्वभावके अनुरूप बकता-झकता, अपने बल-विक्रम-शौर्यका उच्च स्वरसे बयान करता हुआ, रक्ष-सेनाको प्रमादपूर्ण धिक्कृत दृष्टिसे देखता हुआ लंका-द्वारकी ओर न देखकर प्राचीर फाँदता हुआ, घोर गर्जनासे दिशाओंको प्रकंपित करता हुआ, समरांगणकी ओर बढ़ चला। आरतीके थाल सजाये वज्रज्वाला-सानंदिनी आदि रानियाँ उसकी ओर बढ़नेका साहस नहीं दिखा पानेके कारण दूर खड़ी रह गयीं।

श्रीरामकथाके इस पावन प्रसंगसे यही निष्कर्ष निकलता है कि श्रीरामके स्वरूपके चिन्तनमात्रसे जब उनके परम वैरीमें भी सात्त्विकताका संचार हो जाता है



( श्रीरामेश्वरजी टांटिया )

पुराने जमानेमें, राजस्थानमें ऐसी मान्यता थी कि यदि किसी व्यक्तिकी अर्थीमें पुत्रका हाथ न लगे या क्रिया-कर्मके लिये पुत्र न हो, तो उसे मोक्ष नहीं मिलता। इसीलिये वहाँ निपूतेकी गाली बहुत बुरी मानी जाती थी। पुत्र-प्राप्तिके लिये लोग व्रत-पूजन और कठोर तपस्या करते थे।

शेखावाटी अंचलके एक शहरमें एक धनाढ्य सेठ रहते थे। घर सब प्रकारकी धन-सम्पत्तिसे भरा-पूरा होनेपर भी संतानके बिना पति-पत्नी दुखी रहते थे। उन्होंने तरह-तरहके व्रत-उपवास, दान-धर्म और तीर्थयात्रा की, पर ईश्वरने उनकी नहीं सुनी। प्रौढ़ावस्था हो जानेपर वे एक तरहसे निराश हो गये। पड़ोसमें उन्हींकी जातिकी एक गरीब परिवार था, जिनके यहाँ सात लड़के थे। एक दिन पति-पत्नी उनके घर गये। देखा कि २-३ वर्षसे लेकर १४-१६ वर्षतकके बच्चे आँगनमें खेल रहे थे। उन्हें देखकर दोनोंकी आँखें भर आयीं। सेठानीने गृहस्वामिनीसे कहा—‘बहन, लोग मुझे निपूती कहकर ताना देते हैं। तुम्हारे सेठजी जब दुकानसे सूने घरमें आते हैं, तो दुखीसे रहते हैं। मैं आँचल पसारकर तुमसे एक बच्चेकी भीख माँग रही हूँ। परमेश्वरने तुम्हें सात दिये हैं, इनमेंसे सात सौ हो जायँ।’ बहुत आरजू-मिन्नतके बाद भी उन लोगोंको निराश वापस लौटना पड़ा।

फतेहपुर (शेखावाटी)–के पास एक टीलेपर नाथ सम्प्रदायके एक महात्माजी रहते थे। सब प्रकारसे निराश होकर एक दिन वे उनकी शरणमें गये और पैर पकड़कर रोने लगे। कहते हैं कि नाथजी महाराज वचनसिद्ध थे। उन्होंने कहा—‘अकालका वर्ष है। भूखे–नंगे बच्चोंका पालन करो, भगवान् तुम्हारी सुनेगा।’ अपने गाँव लौटकर वे लोग एक बड़े नोहरेमें गरीबोंके भूखे बच्चोंको खिलाने–पिलाने लगे। दोनों पति–पत्नी सारे दिन उनकी देख–भाल करते रहते।

एक वर्षके भीतर ही उनके घरमें पुत्र-जन्म हुआ।

इस अवसरपर सेठजीने जी खोलकर दान-धर्म और पूजा-पाठ किया। सारे गाँवमें मिश्री-बादाम भेजे। बच्चेको लेकर वे नाथजी महाराजकी सेवामें गये। महाराजजीने कहा—‘आप दोनोंकी आयु भगवान्के भजन करनेकी है। संसारकी मोह-मायामें जितना कम पड़ो, उतना ही अच्छा।’

सेठ-सेठानी उस समय इतने हर्ष-विभोर थे कि नाथजीकी इस गूढ़ बातपर उन्होंने ध्यान नहीं दिया।

सुखके दिन बीतते देर नहीं लगती। देखते-देखते शिशु बिहारी सोलह सालका तरुण हो गया। वह बहुत ही सुन्दर, स्वस्थ, शिक्षित तथा विनयशील था।

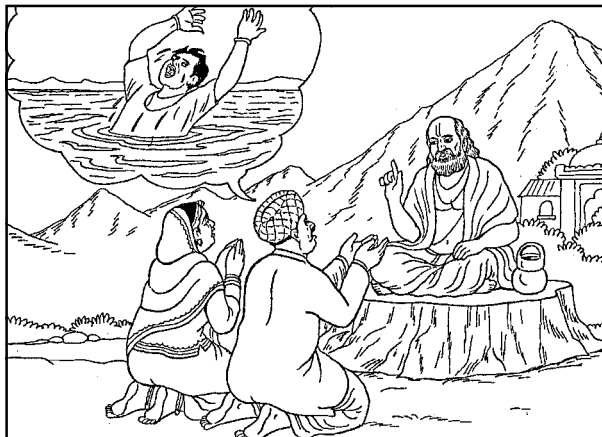
दीपावलीके बाद वे दोनों प्रतिवर्ष बिहारीके साथ महाराजजीके पास धोक खानेको जाते थे। इस बार उन्होंने जब उसका विवाह करनेकी आज्ञा चाही, तो महाराजजीने टाल-मटोल कर दी और कहा कि इतनी जल्दी क्या है ? लाड़-प्यारका इकलौता बालक था। सेठ-सेठानी कभी उसे आँखोंसे ओझल नहीं होने देते। कभी-कदाच उसका पेट या सिर दुखने लगता, तो वैद्य-डॉक्टरसे घर भर जाता, परंतु कहते हैं कि मृत्यु अपने लिये सौ रास्ते बना लेती है।

राजस्थानमें जिस दिन अच्छी वर्षा हो जाती है, लोग हर्ष-विभोर होकर देखने जाते हैं कि तालाबमें कितना पानी जमा हुआ। पानीको माथेसे लगाकर आचमन करते हैं।

ऐसे ही एक दिन बिहारी मित्रोंके साथ गाँवके जोहड़ेपर गया था। आचमन करते समय उसका पैर फिसल गया और वह क्षणभरमें ही जलमग्न हो गया। तालाब बहुत बड़ा भी नहीं था, परंतु साथियोंके बहुत प्रयत्न करनेपर भी कुछ फल नहीं निकला। सेठ-सेठानीका बुरा हाल था। पागल-जैसे हो गये, स्वयं भी तालाबमें डूबनेके लिये जिद करने लगे, लोगोंने मुश्किलसे उन्हें पकड़े रखा।



दूसरे दिन ही दोनों महाराजजीके टीलेपर जाकर



उनके पैर पड़कर बैठ गये। कहने लगे कि आपने हमें इस बुढ़ापेमें उलटा दुखी कर दिया, इससे तो अच्छा होता कि हमारे पुत्र ही न पैदा होता। महाराजजीने समझानेका प्रयत्न किया कि जो कुछ होता है, सब ईश्वरकी इच्छासे होता है और मनुष्यको उसे शिरोधार्य करना चाहिये। बिहारीके साथ तुम्हारा इतने ही दिनोंका सम्बन्ध था।

बहुत विनती-प्रार्थनापर महाराजने कहा कि गरीब

और अनाथ बच्चोंके लिये स्कूल खोलकर उनकी पढ़ाईकी और रहने-खानेकी व्यवस्था करो।

सेठजीने अपने एक मकानमें इस प्रकारके छोटे बच्चोंका एक स्कूल खोल दिया। दोनों पति-पत्नी दूसरे सारे कार्योंको छोड़कर सुबहसे शामतक उनकी शिक्षा देखभाल और खिलाने-पिलानेकी व्यवस्था करने लगे। बच्चे उनसे इतने हिल-मिल गये कि उन्हें 'माताजी' 'पिताजी' कहने लगे। वे कभी उनकी गोदमें आकर बैठ जाते, तो कभी पीछेसे आकर आँखें बन्द कर देते। कभी-कदाच कोई बच्चा बीमार हो जाता, तो उनके हाथसे दवा लेनेकी जिद करने लगता।

सदाकी भाँति, दीपावलीके बाद वे दोनों दर्शन और चरण-स्पर्शके लिये महाराजजीके पास गये। उन्होंने पति-पत्नीको सुखी रहनेका आशीष दिया और हाल-चाल पूछा। सेठ-सेठानीका उत्तर था, 'महाराज! आपके आदेशका हम पालन कर रहे हैं। अब हम सुखी हैं, परम सुखी! हमें पाठशालाके बच्चोंमें अपना बिहारी मिल गया है।

[ प्रेषक—श्रीनन्दलालजी टांटिया ]

प्रेरक-प्रसंग—

## दृढ़निश्चय

लाला दौलतरामजी अमृतसरमें कोर्ट इन्स्पेक्टर थे। इनके शेखूपुरा जिलेके एक गुरुद्वारेमें जो पुत्र हुआ, कौन जानता था कि वह बालक आगे चलकर इतनी ख्याति प्राप्त करेगा। बालकका नाम गंगाराम था। बचपनसे ही वह अपनी धुनका पक्का था। जब गंगाराम एट्टेन्स पास कर चुके, तब नौकरीकी खोजमें लाहौर आये। लाहौरमें उनके कुलके पुरोहित एक इंजीनियरके दफ्तरमें नौकर थे। गंगाराम जब उनसे मिलने गये, तब वे दफ्तरमें नहीं थे, अतः एक कुर्सीपर बैठ गये। यह कुर्सी दफ्तरके अफसर इंजीनियर साहबकी थी। इंजीनियरसाहबने आते ही गंगारामको डाँटकर अपनी कुर्सीसे उठा दिया। थोड़ी देरमें वे पुरोहितजी आये और गंगारामसे पूछने लगे—'अब तुम्हारा क्या करनेका विचार है?'

गंगारामने कहा—'विचार तो कुछ और था, पर अब बदल गया है! अब तो मैं इंजीनियर बनूँगा और जिस कुर्सीपरसे उठाया गया हूँ, उसपर बैठकर रहूँगा।'

उस समय लोगोंने हँसकर बात उड़ा दी; किंतु गंगाराम वहाँसे लौट आये और रुड़कीके टामसन कॉलेजमें भर्ती हो गये। कुछ दिनों बाद इंजीनियर होकर अपनी बात उन्होंने सच्ची कर दी। उसी ऑफिसके इंजीनियरकी कुर्सीपर वे सचमुच आ बैठे।

अपने जीवनकी कमाईका अधिकांश उन्होंने दीन-दुखियोंकी सेवामें लगाया। पचास लाखसे भी अधिक द्रव्य इन्होंने विभिन्न संस्थाओंमें व्यय किया। विद्यार्थियोंकी पढ़ाईमें इन्होंने बहुत अधिक सहायता की। सरकारने 'सर' की पदवी देकर इनका सम्मान किया था।

## राम-नामका अखूट खजाना

( महात्मा गाँधीजी )

राम-नाम सिर्फ कुछ खास आदमियोंके लिये नहीं है, वह सबके लिये है। जो राम-नाम लेता है, वह अपने लिये भारी खजाना जमा करता जाता है और यह तो एक ऐसा खजाना है, जो कभी खूटता नहीं। जितना इसमेंसे निकालो, उतना बढ़ता ही जाता है। इसका अन्त ही नहीं, और जैसा कि उपनिषद् कहता है—‘पूर्णमेंसे पूर्ण निकालो, तो पूर्ण ही बाकी रह जाता है, वैसे ही राम-नाम है। यह तमाम बीमारियोंका एक शर्तिजा इलाज है, फिर चाहे वे (बीमारियाँ) शारीरिक हों, मानसिक हों या आध्यात्मिक हों। राम-नाम ईश्वरके कई नामोंमेंसे एक है। ××× आप रामकी जगह कृष्ण कहें या ईश्वरके अनगिनत नामोंमेंसे कोई और नाम लें, तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लड़कपनमें अँधेरेमें मुझे भूत-प्रेतका डर लगा करता था। मेरी आया ने मुझसे कहा था—‘अगर तुम राम-नाम लोगे तो तमाम भूत-प्रेत भाग जायँगे।’ मैं तो बच्चा ही था, लेकिन आयाकी बातपर मेरी श्रद्धा थी। मैंने उसकी सलाहपर पूरा-पूरा अमल किया। इससे मेरा डर भाग गया। अगर एक बच्चेका यह अनुभव है तो सोचिये कि बड़े आदमियोंके बुद्धि और श्रद्धाके साथ राम-नाम लेनेसे उन्हें कितना फायदा हो सकता है? लेकिन शर्त यह है कि राम-नाम दिलसे निकले। क्या बुरे विचार आपके मनमें आते हैं? क्या काम या लोभ आपको सताते हैं? यदि ऐसा है तो (इन्हें मिटानेके लिये) राम-नाम-जैसा कोई जादू नहीं। × × ×

फर्ज कीजिये कि आपके मनमें यह लालच पैदा होता है बिना मेहनत किये, बेईमानीके तरीकेसे, आप लाखों कमा लें, लेकिन यदि आपको राम-नामपर श्रद्धा है तो आप सोचेंगे कि बीबी-बच्चोंके लिये आप ऐसी दौलत क्यों इकट्ठा करें, जिसे वे शायद उड़ा दें ? अच्छे आचरण और अच्छी शिक्षाके रूपमें उनके लिये आप ऐसी विरासत क्यों न छोड़ जायँ, जिससे वे ईमानदारी और मेहनतके साथ अपनी रोटी कमा सकें ? आप यह सब सोचते तो हैं, परंतु कर नहीं पाते। मगर राम-नामका निरन्तर जप चलता रहे तो एक दिन वह आपके कण्ठसे हृदयतक उतर आयेगा और वह राम-बाण चीज साबित होगा। वह आपके सब भ्रम मिटा देगा, आपके झूठे मोह और अज्ञानको छुड़ा देगा, तब आप समझ जायँगे कि आप कितने पागल थे, जो बाल-बच्चोंके लिये करोड़ोंकी इच्छा करते थे, बजाय इसके कि उन्हें राम-नामका वह खजाना देते, जिसकी कीमत कोई पा नहीं सकता, जो हमें भटकने नहीं देता, जो मुक्तिदाता है। आप खुशीसे फूले नहीं समायेंगे। अपने बाल-बच्चों और अपनी पत्नीसे कहेंगे 'मैं करोड़ों कमाने गया था, मगर वह कमाना तो भूल गया, दूसरे करोड़ लाया हूँ।' आपकी पत्नी पूछेगी 'कहाँ है वह हीरा, जरा देखूँ तो ?' जवाबमें आपकी आँखें हँसेंगी, मुँह हँसेगा, आहिस्तासे आप जवाब देंगे—'जो करोड़ोंका पति है, उसको हृदयमें रखकर आया हूँ। तम चैनसे रहोगी, मैं भी चैनसे रहूँगा।'

**‘सङ्कीर्तनम्’**

( आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादजी मिश्र 'विनय' )

गोविन्द हरे! गोपाल हरे!!

जय देव! दलनभवजाल हरे!!

रघुनन्दन जय जनपाल हरे!

यदनन्दन      भक्तरसाल      हरे!!

शिवमानसमञ्जसमराल हरे!

गोविन्द हरे! गोपाल हरे!!

दशकन्धरकण्ठकराल हरे!

जय कंसकेशिकलकाल हरे!!

हतदन्तवक्त्रशिङ्गपाल                      हरे!

श्यामल! जय तलिततमाल! हरे!

केसरतिलकाञ्चितभाल! हरे!!

धृतललितकलितवनमाल!      हरे!

गोविन्द हरे गोपाल! हरे!!

जय राम! भवनभपाल हरे!

जय नन्दयशोदाबाल हरे!!

भयभञ्जन    बाह्विशाल    हरे!

**अणुयुद्ध हुआ तो गायके गोबरसे लिपा घर ही बचेगा**

( श्रीरजतकुमारजी )

भारत गोमांसका निर्यात करता है—यह अत्यन्त शर्मनाक बात है। जिस देशमें गायको माँ माना जाता हो, जिस देशमें गोचारण और गोपालनके लिये स्वयं परब्रह्म परमात्मा अवतार लेते हों, वह देश गोमांसका निर्यात करे—इससे बढ़कर विडम्बना और क्या हो सकती है ? भारत वियतनाम, मलेशिया, सऊदी अरब, मिस्र, यूएई समेत संसारके ६५ देशोंको गोमांसका निर्यात करता है। ३१ मार्च सन् २०१४ ई० तक भारतमें पंजीकृत कत्लखानोंकी संख्या १६३२ रही है, जबकि ३०,००० से अधिक गैर पंजीकृत कत्लखाने हैं। सबसे ज्यादा कत्लखाने ३१६ महाराष्ट्रमें हैं।

गायके विभिन्न अंगोंसे विभिन्न वस्तुएँ बनायी जाती हैं, जैसे सींगसे आभूषण, कानके झुमके, गलेका हार, कंधी, कोटके बटन, अग्निशमन प्रोडक्ट आदि। उसकी चमड़ीसे जूते, चप्पल, बेल्ट आदि बनाये जाते हैं। जिलेटिन एक बाई प्रोडक्ट है, जिसका प्रयोग जेली और दूसरे खाद्य उत्पादों, कड़वी दवाओंकी कोटिंगके लिये होता है। इसकी हड्डीका उपयोग साबुन, टूथपेस्ट, बोन चायनाके उत्पादों तथा शक्करको सफेद बनानेमें होता है। इसकी आँतोंका उपयोग सर्जरीमें सिलाईके लिये प्रयुक्त होनेवाले धागेमें किया जाता है। मांसको सिलने तथा आपसमें जोड़नेमें भी इसका प्रयोग होता है। बैडमिन्टन और टेनिसके रैकेट, वॉयलिनके तार तथा अन्य संगीत-यन्त्रोंमें इसका प्रयोग होता है। इसकी पूँछके बालसे पेन्ट-ब्रुश और डस्टर बनते हैं। इसकी चर्बीसे बिस्कट पपड़ीदार और कुरकुरे बनते हैं। इसके रक्तसे बननेवाले सीरमका प्रयोग हीमोग्लोबिनमें ऑयरन टॉनिक तथा जानवरोंके टीके बनानेमें किया जाता है। इसकी ग्रन्थिसे इन्सुलीन, ट्रिप्टेन, हेपेरिन बनता है।

मुगलकालके अनेक कालखण्डोंमें गोहत्या बन्द थी।

१८५७ ई० में २५०० मुसलमानोंने एक विजार (साँड़)-की प्राणरक्षाके लिये अपनी जान कुर्बान कर दी थी। अंग्रेज शासकोंने मुसलमानोंसे विजार (साँड़)-की सवारी करनेको कहा। मुसलमानोंने कहा विजार शंकरजीके बेटे हैं, हम विजारकी सवारी नहीं करेंगे। इसपर अंग्रेजोंने बन्दूक और तोप चलवाकर २५०० मुसलमानोंको मरवा दिया था।

आज मुम्बई (महाराष्ट्र) -में देवनार तथा हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) -में अलकबीर -जैसे गो कत्लखाने चल रहे हैं। गोहत्याको धर्मभ्रष्ट अंग्रेजोंने प्रश्रय दिया। उन्होंने मुफ्तमें चाय पिलायी, विलायती घीकी पूड़ियाँ मुफ्तमें बाँटीं। अब चाय और विलायती घीके हम गुलाम हो गये। गोहत्या और गोमांसका प्रयोग भी उन्हींकी एक चाल है। जबकि गाय इतनी उपयोगी है कि इसका दूध तो अमृत है ही गोमूत्र और गोबर भी अद्भुत उपयोगी है। वर्तमान परीक्षणोंसे यह साबित हो गया है कि गायके गोबरसे लिपे घरोंपर आण्विक विकिरणका प्रभाव नहीं पड़ता।

अब यदि अणुयुद्ध हुआ, तब गायके गोबरसे लिपा हुआ घर ही बचेगा। एटमी परीक्षणसे जो विकिरण होता है, उसे गायका गोबर नष्ट कर देता है। इसीलिये आज सम्पूर्ण अमेरिकामें गोशालाएँ बन रही हैं। वहाँ आदमी गायको नहीं पालता, बल्कि गाय आदमीको पालती है। सऊदी अरबके अलरियाजमें ३८ हजार गायोंकी गोशाला बनी है। इसके कर्मचारी भी हैं। यहाँ ५ हजार भारतीय देशी नस्लकी गायें हैं। गोवंशको मरनेपर आदरके साथ दफन किया जाता है। गोमूत्रसे शुगर, ब्लड प्रेशर, कैंसर, पेटके रोग, पीलिया, जिगर आदि ठीक हो जाते हैं। गायके गोबरसे चर्मरोग ठीक हो जाते हैं। मांसाहार सभी पापों एवं रोगोंका जनक है। यहाँतक कि गोमांस तो कोढ़ रोग उत्पन्न करता है, अतः गायको मारकर नहीं, बल्कि पालकर अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

## साधनोपयोगी पत्र

(१)

### भोजनकी शुद्धि क्या है ?

सम्मान्य महोदय ! सादर हरिस्मरण । आपका कृपापत्र मिला । भोजनमें शुद्धि परमावश्यक है । जैसा अन्न खाया जाता है, वैसा ही मन बनता है और जैसा मन होता है, वैसे ही उससे कर्म होते हैं और वही उसका स्वरूप होता है । कर्मानुसार ही आगे फल मिलता है । भोजनकी शुद्धिके लिये नीचे लिखी बातोंपर ध्यान रखना आवश्यक है—  
चोरी, ठगी, डकैती, खून, अन्याय, असत्य, धोखा तथा व्यभिचार आदिके द्वारा आये हुए पैसे अशुद्ध होते हैं । ऐसे पैसोंसे आया हुआ अन्न तथा चोरीसे दूसरेके हकका लाया हुआ अन्न सर्वथा अशुद्ध है । उस अन्नके भोजनसे मन-बुद्धि बिगड़ते हैं; उनमें वैसी ही पापवासनाका उदय होता है ।

मांस, मद्य, मछली, अण्डे—इनके संयोगसे बने भोज्य पदार्थ, चर्बी, हड्डी मिले पदार्थ, तामसिक वस्तुएँ—जैसे प्याज-लहसुन आदि, उच्छिष्ट (दूसरोंकी जूठी) वस्तुएँ, दुर्गन्धयुक्त—ये सब अशुद्ध वस्तु हैं । बड़ी सावधानीके साथ इनका त्याग किये रहना चाहिये । इनके सेवनसे मनुष्यका निश्चित पतन होता है ।

भोजन बनानेवाला व्यक्ति स्वयं सदाचारी, शुद्ध, स्नान किया हुआ, शुद्ध वस्त्र पहने हुए, नीरोग हो; भोजन बनाते समय उसके मनमें प्रेम, सद्भाव, शान्ति तथा श्रद्धा हो; काम-वासना, क्रोध, वैर, हिंसा या अहितकी भावना न हो । चटोरा न हो, जो बनाता-बनाता ही चुपकेसे खाता जाय—ऐसा पाचक रसोइया अशुद्ध होता है; अशुद्ध पाचकके द्वारा बनाये भोजनमें उसके दोष संक्रमित होकर भोजन करनेवालेपर बुरा प्रभाव डालते हैं ।

भोजन बनानेका स्थान शुद्ध हो, जिसमें गन्दगी, रोगकारक कीटाणु न भरे हों, (पहले रसोई बनानेका स्थान नित्य गोबर-मिट्टीसे लीपा जाता था, जिससे रोग-कीटाणु नहीं रह पाते थे) । जिस स्थानमें व्यभिचार, जूआ, चोरी, मांसादि अखाद्य वस्तुओंका पाक तथा भक्षण न होता हो, शराब न पिया जाता हो । यह स्थानकी शुद्धि है । अशुद्ध

स्थानमें बने भोजनमें वहाँकी अशुद्धि आ जाती है ।

भोजन बनानेके बर्तन शुद्ध हों—शुद्ध धातुसे बने हों या मिट्टीके नये बर्तन हों । जूठे, मैले तथा काट लगे न हों, जिनमें कभी मांसादि न पकाया गया हो, जो नीचकर्मी मनुष्योंके द्वारा स्पर्शित तथा काममें लाये हुए न हों ।

भोजन बनाने तथा करानेवालेमें जहाँ श्रद्धा, प्रेम, आत्मीयता, हितभावना रहती है, वहाँ उस भोजनमें इन्हीं भावोंका संक्रमण होता है, जो भोजन करनेवालेका बड़ा मंगल करते हैं । भगवान् श्रीकृष्णने राजा दुर्योधनके अनुरोध करनेपर भी उसमें प्रेम तथा सद्भाव न होनेके कारण उसके यहाँ बहुमूल्य तथा विविध प्रकारके बढ़िया भोजन करनेसे इनकार कर दिया था और भक्त विदुरकी कुटियापर जाकर सादा, पर प्रेमभरा भोजन किया था ।

माता, धर्मपत्नी, बहन तथा मनमें अत्यन्त स्नेह रखनेवाले लोगोंके द्वारा बनाया हुआ तथा कराया हुआ भोजन शुद्ध तथा लाभदायक माना गया है ।

भोजन करनेवाला स्वयं शुद्ध हो, स्नान किये हुए तथा शुद्ध वस्त्र पहने हुए हो । हाथ-पैर-मुँह धोकर शान्तिसे शुद्ध आसनपर बैठकर भोजन करे । भोजन करते समय मनमें कामवासना, क्रोध, हिंसा, वैर-वृत्ति न हो; मन प्रफुल्लित हो । अन्नको प्रणाम करके भोजन करे; मौन रहे या सात्त्विक बातचीत करे । भूखसे अधिक न खाय । भीभके स्वादकी अपेक्षा वस्तुके गुण-दोषपर तथा अपने शरीरपर होनेवाले उसके परिणामपर अधिक ध्यान रखे । खड़े होकर, घूमता-फिरता हुआ या जूता पहने कभी न खाये । खानेके बाद कुल्ले करे, जिससे दाँतोंमें अन्नकण न रह जायँ; तदनन्तर हाथ अवश्य धोये । जूठन न छोड़े ।

भोजन करते समय आरम्भमें भगवान्का स्मरण करके बलिवैश्वदेव किये अन्नका भोजन करना बहुत उत्तम है । भोजन करनेसे पहले अन्नका कुछ हिस्सा निकालकर अलग रख दे, जिसे गौ तथा पशु-पक्षी आदिको खिला दे या पहले खिलाकर तब भोजन करे ।

भोजन करनेके शास्त्रीय विधानकी कुछ आवश्यक बातें ये हैं—भोजन तैयार होनेपर—

एतदन्नादिकं सर्वं ॐ अच्छिद्रमस्तु स्वाहा ।

—यह मन्त्र बोलकर तथा भगवान्का नाम लेकर

‘हे प्रभो! तुम्हीं घर हो, तुम्हीं घरवाले हो, तुम्हीं सत्य-सत्य प्रियतम और आत्मीय हो, तुम्हीं एक बस पूजनीय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हो, वन्दनीय हो और नित्य वरणीय हो। यह अन्न तुम्हारी ही वस्तु है। हे घनश्याम! हम भी तुम्हारी ही हैं, एक तुम्हारे लिये ही भोजन बना रही हैं। यह हमारा पाक तुम्हारे ग्रहण करनेयोग्य सुन्दर बने। फिर तुम्हीं इसे ग्रहणकर— इसका आस्वादनकर इसे ‘महाप्रसाद’ बना दो। जिससे हमारी सेवा करनेकी शक्ति बढ़े और सारे विघ्नों—कष्टोंका नाश हो जाय।’

भोजन एक ऐसा कृत्य है, जिसके संयमपूर्ण शुद्ध रहनेसे वह भगवान्की पूजा बनता है—भोजनके द्वारा मनुष्य अन्तःस्थित वैश्वानररूप भगवान्को तृप्त करके उनसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, सात्त्विक विचार, शुभ परिणाम, भगवत्कृपा, शुभ मति, सुख तथा शुभ गतिको प्राप्त करता है और इसके विपरीत अशुद्ध अनर्गल भोजनसे रोग, मानसपतन, अशुभ परिणाम, तामस-बुद्धि, दुःख तथा नरकोंकी प्राप्ति होती है।

जो भोजन सबका हिस्सा देकर किया जाता है, वह ईमानदारीका और पापनाशक होता है; जो केवल अपने लिये ही होता है, वह पापमय होता है। भोजनके अन्तमें ‘अमृतापिधानमसि’ इस मन्त्रसे आचमन करना चाहिये। इसका तात्पर्य है कि हम अपने किये गये भोजनको अमृतसे ढकते हैं।

उपर्युक्त बातें शुद्ध भोजनके लिये बहुत आवश्यक हैं। इनका यथासाध्य अधिक-से-अधिक पालन करना चाहिये। शेष भगवत्कृपा।

(२)

शिवधनुष चिन्मय था

प्रिय महोदय! सप्रेम हरिस्मरण। कृपापत्र मिला। धन्यवाद। उत्तरमें निवेदन है कि जनकपुरका वह धनुष जिसे श्रीरामचन्द्रजीने तोड़ा था अथवा जिसके टूटनेकी लीलामात्र हुई थी, मूलतः भगवान् शंकरके पिनाकसे प्रकट हुआ था। भगवान् शंकर सच्चिदानन्दमय परमेश्वर हैं। उनका धनुष, उनका वाहन, उनके आभूषण सब कुछ चिन्मय हैं—दिव्य हैं। उन्हींके स्वरूप हैं। भगवान् शिवने श्रीरामचन्द्रजीकी उस विवाहलीलामें योग देनेके उद्देश्यसे उसके अंगरूपमें ही उस धनुषको प्रकट किया था। बहुत पहलेसे ही वह जनकपुरमें इसी दिव्य सुयोगके लिये रखा गया था। उस धनुषमें गढ़ने बढ़ने

हलके होने और भारी होनेकी भी स्वाभाविक शक्ति थी।

जिस समय वन्दीजनोंने राजा जनकका प्रण सुनाया, उस समय जिनके मनमें कुछ विचार था, जो भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी महिमा और उस धनुषकी दिव्यतासे परिचित थे, वे राजा तो उस धनुषके पास ही नहीं गये— जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥

परंतु जो मूर्ख थे, अभिमानी थे, वे प्रतिज्ञा सुनते ही दौड़ पड़े उसे तोड़नेके लिये। उन्हें यह भय था कि हमसे पहले पहुँचकर कोई दूसरा न तोड़ डाले। वे तमक-तमककर उठते, धनुषमें हाथ लगाते, उसे उठानेके लिये बल लगाते; परंतु जब उठा नहीं पाते, तब लजाकर लौट आते। उस समय गोस्वामीजीने एक बड़ी सुन्दर बात कही है—

मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ।

मानो शूरवीर राजाओंकी भुजाओंका बल पाकर वह धनुष अधिक-अधिक—बड़ा-बड़ा होता जाता था और उनका बल पाकर गरुआता—भारी होता जाता था।

—इन पंक्तियोंद्वारा धनुषकी चिन्मयता और दिव्यताकी ओर संकेत किया गया है। अतः दस हजार योद्धा जब एक साथ लगे, तब वह धनुष उनके लिये उतना ही बड़ा और उतना ही भारी हो गया। राजा यह नहीं समझ सके कि धनुष बढ़ रहा है; वे जब जाते, उन्हें हाथ लगानेके लिये धनुष मिल जाता था।

सीताजी भगवान्की स्वरूपभूता साक्षात् आह्लादिनी शक्ति हैं। वे धनुषकी इस दिव्यताको जानती हैं, अतएव मन-ही-मन उसकी प्रार्थना करती हैं—

... .. । अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥  
निज जडता लोगन्ह पर डारी । होहि हरु अरघपतिहि निहारी ॥

सीताजीकी इच्छाशक्तिका प्रभाव धनुषपर पड़ा; वह बहुत छोटा और हलका हो गया। इसका आभास गोस्वामीजी महाराज गीतावली (पद-संख्या १२)-में देते हैं—

दाहिनो      दियो      पिनाकु

सहमि भयो मनाक्कु । इत्यादि

रामायण भगवान्की लीलाका मधुर ग्रन्थ है, प्रेमपूर्वक पाठ करके इसके रसामृतका पान करना चाहिये। व्यर्थकी शंकाओंमें पड़नेसे कोई लाभ नहीं।

Hinduism Discord Server <https://dsc.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sh





—राधेश्याम खेमका

इस नगरको उज्जयिनी या अवन्तिका भी कहते हैं। इस स्थानको पृथ्वीका नाभिदेश कहा गया है। द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें महाकाल लिंग यहीं है और ५१ शक्तिपीठोंमें यहाँ एक पीठ भी है। यहाँ सतीका कूर्पर (केहुनी) गिरा था। रुद्रसागर सरोवरके पास हरसिद्धि देवीका मन्दिर है; वहीं यह शक्तिपीठ है और मूर्तिके बदले केहुनीकी ही पूजा होती है। द्वापरमें श्रीकृष्ण-बलराम यहीं महर्षि सान्दीपनिके आश्रममें अध्ययन करने आये थे। उज्जयिनी बहुत वैभवशालिनी रह चुकी है। महाराज विक्रमादित्यके समय उज्जयिनी भारतकी राजधानी थी। भारतीय ज्योतिषशास्त्रमें देशान्तरकी शून्यरेखा उज्जयिनीसे प्रारम्भ हुई मानी जाती थी। यह सप्त पुरियोंमें एक पुरी है। यहाँ बारह वर्षमें कुम्भका महापर्व होता है।

## पढ़ो, समझो और करो

(१)

### गंगाजलसे प्रेतात्माओंका उद्धार

मेरा मूल निवास-स्थान मांडलगढ़ (जिला—भीलवाड़ा, राजस्थान) है। दुर्गपर ही हमारी हवेली थी, जो अब प्रायः खण्डहर हो गयी है। पिताजी सरकारी नौकरीमें होनेसे मांडलगढ़ छोड़ चुके थे। हमारे दादा—परदादा कृषक जमींदार थे। प्रस्तुत सत्य घटना लगभग ५०-५५ वर्ष पुरानी मेरे बाल्यकालकी है। हम सपरिवार दीपावलीपर मांडलगढ़ जाते थे। दीपावलीके एक दिन पूर्व रात्रि—जागरण होता था। दुर्गपर एक जलाशय बना हुआ है, जो सागरके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें लगभग बीस हजार सीढ़ियाँ बनी होंगी। बारहों महीने वह पानीसे भरा रहता है। रात्रि—जागरणमें देवी-देवताओंको स्नान करानेहेतु सागरसे शुद्ध पानी लाना पड़ता था। मैं और मेरे स्वर्गीय पिताजी पानी लानेका पात्र लेकर सागर गये। सन्ध्या समाप्त हो गयी थी। कृष्णपक्षकी रात्रि होनेसे अँधेरा हो गया था। जलाशयसे पानीका पात्र लेकर हम जब निर्जन रास्तेसे आ रहे थे तो हमें मार्गके बायीं ओर एक चट्टानके पास दो स्त्रियाँ घूँघट निकाले मिलीं। दोनों पत्थरकी मूर्तिकी तरह खड़ी थीं, मानो किसीने आसमानसे उतारकर वहाँ स्थापित कर दी हों। उनकी लम्बाई औसत स्त्रियोंकी लम्बाईसे कुछ अधिक थी। हमें थोड़ा भय लगा। आसपास कोई नहीं था। चार कदम आगे चलकर जब हमने पीछे मुड़कर देखा तो दोनों गायब थीं। पिताजीने हनुमानचालीसाकी वह चौपाई दोहराई **‘भूत पिसाच निकट नहीं आवैं। महावीर जब नाम सुनावैं॥’** गायत्री मन्त्रका मन-ही-मन जप किया। तदनन्तर घर लौट आये। जब हमने इस बातका जिक्र स्वजनोंसे किया तो ज्ञात हुआ कि चट्टानके पास खदानमें कुछ वर्षों पूर्व दो महिलाएँ दबकर मर गयी थीं। उन्हींकी भटकती प्रेतात्माएँ कभी-कभी सशरीर दिखायी दे जाती हैं।

इस घटनाके पश्चात् वे स्त्रियाँ पुनः हमें स्वप्नमें दिखायी दीं और बोलीं—‘भैया, हमारा उद्धार कर दो। हम प्रेतयोनिमें दुखी हैं। गंगाजलसे चट्टानके पास छिड़कावकर हमारे उद्धारके लिये भगवान्से प्रार्थना करो।’ तदनन्तर मैंने एवं अन्य परिजनोंने चट्टानके पास गंगाजलका छिड़कावकर वहाँ दीपक जलाकर उन प्रेतात्माओंके उद्धारके लिये भगवान्से प्रार्थना की एवं अन्य धार्मिक कृत्य किये। इस कार्यके सम्पन्न होनेके पश्चात् ये प्रेतात्माएँ पुनः मेरे स्वप्नमें दिखायी दीं और बोलीं—‘भैया, अब हमें प्रेतयोनिसे मुक्ति मिल गयी है, हमें पितृलोकमें जगह (जाजम) मिल गयी है। ईश्वर आपका भला करें।’

इस घटनासे विदित होता है कि गंगाजलका कितना महत्त्व है; यह मानव ही नहीं, परलोकगत आत्माओंको भी शान्ति प्रदान करता है।—डॉ० श्याममनोहर व्यास

(२)

### साहसी बालक

गुजरात राज्यके आनन्द जिलेमें एक करमसद नामका गाँव है। वहाँ अँगरेजी विद्यालय न होनेसे वहाँके कुछ विद्यार्थी पाँच-छः मील दूर पेटलाद गाँवमें पढ़ने जाते थे। इतना रास्ता पैदल ही जाना पड़ता था, इसलिये बच्चे भोरमें ही विद्यालयके लिये निकल पड़ते थे। खेतोंके बीच पगडंडीसे होकर गुजरना होता था। रास्तेभर हँसते-खेलते, गप्प लड़ाते वे सब विद्यालय जाया करते थे। भोरका शान्त वातावरण, गाँवकी शुद्ध प्राकृतिक हवा, पक्षियोंका मधुर कलरव, इनसे बच्चोंका मन आनन्दसे भरा रहता था। एक दिन हमेशाकी तरह पाँच-छः विद्यार्थी भोरमें विद्यालयकी ओर निकले। पगडंडी पार करते समय एक विद्यार्थीका ध्यान गया कि उनमेंसे एक कम है। आसपास देखकर वह बोला, ‘अरे! वल्लभ कहाँ गया?’ दूसरेने जवाब दिया, ‘वह देखो, वह वहाँ कुछ कर रहा है।’ उसने चिल्लाकर

पूछा, 'अरे वल्लभ! तू क्या कर रहा है? वहाँ वल्लभने जवाब दिया, थोड़ा रुको, बस, अभी मैं आ ही रहा हूँ।' इतना कहकर उसने खेतकी पगडंडीके बीच एक पत्थरके खूँटेको खींच निकाला और एक तरफ फेंक दिया। दौड़ते हुए वह फिरसे अपने साथियोंसे जा मिला।

एक साथीने पूछा, 'अरे वल्लभ! तू पीछे क्यों रह गया?' वल्लभने सरल भावसे कहा, 'रास्तेके बीच एक पत्थर गड़ा हुआ था। हमारी तरह अनेक लोगोंको उससे तकलीफ हुई होगी। अँधेरेमें कुछ लोगोंके पैरमें चोट भी लगी होगी। कल मैंने निश्चय किया था कि आज उसे उखाड़कर ही दम लूँगा। इसलिये उसे निकालकर फेंक दिया।'

यह बालक आगे चलकर देशके महान् नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल हुए। इनकी कार्य-कुशलता और दूसरोंके प्रति सेवाकी भावना देखकर महात्मा गाँधीजीने 'सरदार' कहकर उनकी प्रशंसा की थी।

—हरिकृष्ण नीखरा ( गुप्त )

(३)

## आयुर्वेदिक घरेलू नुस्खे

[गताङ्क ६ पृ०सं०-४९ से आगे]

(१) करीब २ लीटर ताजी छाछ लेकर उसमें ५० ग्राम भुना जीरा पीसकर एवं थोड़ा-सा नमक मिला दें। जब भी प्यास लगे, तब पानीकी जगहपर एक गिलास छाछ पी लें। पूरे दिन पानीके बदलेमें यह छाछ ही पीयें। सात दिनतक यह प्रयोग करें। मस्से ठीक हो जायँगे।

(२) ग्रीष्मऋतुमें प्रायः पीठके ऊपर घमौरियाँ (छोटी-छोटी फुन्सियाँ) हो जाती हैं। ५ ग्राम सौँफ कूटकर पानीसे भरे बर्तनमें डाल दें एवं प्रातः इसी पानीसे स्नान करें तथा सौँफको पानीमें पीसकर लेप बनाकर पीठपर लगानेसे घमौरियाँ शीघ्र ही ठीक होती हैं।

(३) तुलसीकी पत्ती खानेसे जुकाम, खाँसी, श्वासकी बीमारी नजदीक नहीं फटकेगी। बड़ेकाँदसे

पत्ती और बच्चोंको पाँच पत्ती पीसकर पानीके साथ चाहिये ।

(४) एक छोटी हरड़ पानीमें भिगोकर रख दें। भोजन करनेके बाद उस हरड़को चूसे, पेटकी सभी बीमारियोंसे निजात मिलेगी।

(५) फोड़े, फुंसी एवं खुजलीपर नीमकी पत्तियाँ पीसकर लगानेसे ठीक हो जाते हैं और रोज एक माहतक कोंपल खानेसे फोड़े-फुंसी एवं चर्मरोगसे निजात मिल जाती है।—सत्यनारायण सामरिया

(8)

## बहू या बेटा

मौसीको देखने नगर-अस्पताल गयी। वहाँ शारदा बहनको देखा। मैंने पूछ लिया—‘अरे! शारदा बहन, तुम यहाँ कैसे?’

‘उनकी (पतिकी) दोनों आँखोंमें मोतियाबिन्द हो गया था, ऑपरेशन हुआ है। चार दिनसे हम यहाँ हैं।’ शारदा बहन बोली—‘परन्तु तुम यहाँ कैसे?’

‘मेरी मौसीका भी आँखका ऑपरेशन हुआ है। मैं उन्हें देखने आयी हूँ।’ मौसीको देखनेके पश्चात् वे मुझे कमरा नं० चार में ले गयीं। बैठनेके पश्चात् मैंने पूछा— ‘तुम्हारे बहू तथा बेटा सब मजेमें हैं।’

एकाएक गम्भीर होकर वे बोलीं—‘तुझे कुछ पता ही नहीं, बेटा हमें छोड़ गया।’ मैं कुछ समझी नहीं, केवल उनके मुखकी ओर देखती रह गयी। वे बोलीं—‘अनिल और तरुलताका विवाह हुए चार वर्ष हुए थे, उनका संसार सुखी था। वहीं हैजेका प्रकोप आया। अनिल उसकी लपेटमें आ गया। हमने पानीकी तरह पैसा बहाया, इलाज किया; परंतु जिसकी आयु ही कम लिखी हो, वहाँ किसकी चलती है ? वह हमें छोड़कर चला गया। डेढ़ वर्ष होनेको आया।’ शारदा बहनकी आवाज भरा गयी।

सुनकर मुझे दुःख हुआ, पूछा 'फिर तुम्हारी  
1. 'MADE WITH LOVE BY Avinash/Sh...



## मनन करने योग्य

### मिथ्या गर्वका परिणाम

समुद्रतटके किसी नगरमें एक धनवान् वैश्यके पुत्रोंने एक कौआ पाल रखा था। वे उस कौआको बराबर अपने भोजनसे बचा अन्न देते थे। उनकी जूँटन खानेवाला वह कौआ स्वादिष्ट तथा पुष्टिकर भोजन खाकर खूब मोटा हो गया था। इससे उसका अहंकार बहुत बढ़ गया। वह अपनेसे श्रेष्ठ पक्षियोंको भी तुच्छ समझने और उनका अपमान करने लगा।

एक दिन समुद्रतटपर कहींसे उड़ते हुए आकर कुछ हंस उतरे। वैश्यके पुत्र उन हंसोंकी प्रशंसा कर रहे थे, यह बात कौआसे सही नहीं गयी। वह उन हंसोंके पास गया और उसे उनमें जो सर्वश्रेष्ठ हंस प्रतीत हुआ, उससे बोला—‘मैं तुम्हारे साथ प्रतियोगिता करके उड़ना चाहता हूँ।’

हंसोंने उसे समझाया—‘भैया! हम तो दूर-दूर उड़नेवाले हैं। हमारा निवास मानसरोवर यहाँसे बहुत दूर है। हमारे साथ प्रतियोगिता करनेसे तुम्हें क्या लाभ होगा। तुम हंसोंके साथ कैसे उड़ सकते हो?’

कौआने गर्वमें आकर कहा—‘मैं उड़नेकी सौ गतियाँ जानता हूँ और प्रत्येकसे सौ योजनतक उड़ सकता हूँ।’ उड़ुन, अवडीन, प्रडीन, डीन आदि अनेकों गतियोंके नाम गिनाकर वह बकवादी कौआ बोला—‘बतलाओ, इनमेंसे तुम किस गतिसे उड़ना चाहते हो?’

तब श्रेष्ठ हंसने कहा—‘काक! तुम तो बड़े निपुण हो। परंतु मैं तो एक ही गति जानता हूँ, जिसे सब पक्षी जानते हैं। मैं उसी गतिसे उड़ूँगा।’

गर्वित कौआका गर्व और बढ़ गया। वह बोला—‘अच्छी बात, तुम जो गति जानते हो, उसीसे उड़ो।’

उस समय कुछ पक्षी वहाँ और आ गये थे। उनके सामने ही हंस और कौआ दोनों समुद्रकी ओर उड़े। समुद्रके ऊपर आकाशमें वह कौआ नाना प्रकारकी कलाबाजियाँ दिखाता पूरी शक्तिसे उड़ा और हंससे कुछ आगे निकल गया। हंस अपनी स्वाभाविक मन्द गतिसे उड़ रहा था। यह देखकर दूसरे कौआ प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

थोड़ी देरमें ही कौआके पंख थकने लगे। वह विश्रामके लिये इधर-उधर वृक्षयुक्त द्वीपोंकी खोज करने लगा। परंतु उसे उस अनन्त सागरके अतिरिक्त कुछ दीख नहीं पड़ता था। इतने समयमें हंस उड़ता हुआ उससे आगे निकल गया था। कौआकी गति मन्द हो गयी। वह अत्यन्त थक गया और ऊँची तरंगोंवाले भयंकर जीवोंसे



भरे समुद्रकी लहरोंके पास गिरनेकी दशामें पहुँच गया।

हंसने देखा कि कौआ बहुत पीछे रह गया है तो रुक गया। उसने कौआके समीप आकर पूछा—‘काक! तुम्हारी चोंच और पंख बार-बार पानीमें डूब रही हैं। यह तुम्हारी कौन-सी गति है?’

हंसकी व्यंग्यभरी बात सुनकर कौआ बड़ी दीनतासे बोला—‘हंस! हम कौआ केवल काँव-काँव करना जानते हैं। हमें भला दूरतक उड़ना क्या आये। मुझे अपनी मूर्खताका दण्ड मिल गया। कृपा करके अब मेरे प्राण बचा लो।’

जलसे भीगे, अचेत और अधमरे कौआपर हंसको दया आ गयी। पैरोंसे उसे उठाकर हंसने पीठपर रख लिया और उसे लादे हुए उड़कर वहाँ आया जहाँसे दोनों उड़े थे। हंसने कौआको उसके स्थानपर छोड़ दिया।

## कल्याणका आगामी ९१वें वर्ष ( सन् २०१७ ई० )-का विशेषाङ्क

# ‘श्रीशिवमहापुराणाङ्क’

[श्लोकाङ्कसहित हिन्दीभाषानुवाद]

भारतीय सनातन संस्कृतिमें कृष्णद्वैपायन महर्षि श्रीवेदव्यासरचित पुराणोंकी वेदके समान प्रतिष्ठा, मान्यता तथा प्रामाणिकता है। वास्तवमें भारतीय संस्कृति एवं मानव-सभ्यताके पूर्ण परिचायक पुराण ही हैं। नारदपुराणका तो यहाँतक कहना है कि जो बातें वेदोंमें नहीं हैं, वे सब स्मृतियोंमें हैं और जो बातें इन दोनोंमें नहीं मिलतीं, वे पुराणोंके द्वारा ज्ञात होती हैं—‘यन्न दृष्टं हि वेदेषु तत्सर्वं लक्ष्यते स्मृतौ। उभयोर्यन्न दृष्टं हि तत्पुराणैः प्रगीयते॥’ पुराणोंका सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यह है कि इनमें वेदोंके तत्त्वदर्शनको आख्यानोके माध्यमसे समझाया गया है ताकि वह शीघ्र ही सुगम रूपसे अधिगम हो सके और सभीको सुलभ हो जाय। पुराणोंका श्रवण-मनन अन्तःकरणको पवित्र करनेका एवं भगवत्प्रीतिका सर्वश्रेष्ठ साधन है। इसीलिये पुराणोंके श्रवण एवं पारायणकी सुदीर्घ परम्परा चली आ रही है। आज भी पुराणोंके सप्ताह-पारायण, नवाह-पारायण एवं मास-पारायण आदि होते रहते हैं।

महापुराण संख्यामें अठारह हैं। इनमें शिवपुराणका विशेष माहात्म्य है। इसके पाठ-पारायण आदिके माहात्म्यके सम्बन्धमें बताया गया है कि यह पुराण समस्त पुराणोंमें श्रेष्ठ है। वेद-वेदान्तमें विलसित परम वस्तु—‘परमात्मा’ का इसमें ‘शिव’ नामसे गान किया गया है। जो व्यक्ति बड़े आदरसे इसे पढ़ता-सुनता है, वह भगवान् शिवका प्रिय होकर परम गतिको प्राप्त कर लेता है—‘यो वै पठेच्च शृणुयात् परमादरेण शम्भुप्रियः स हि लभेत् परमां गतिं वै।’ ( शिवपु० विद्ये० १।६७ )

वर्तमानमें उपलब्ध शिवपुराणमें सात संहिताएँ हैं। पहली संहिताका नाम विद्येश्वरसंहिता है। दूसरी संहिता रुद्रसंहिता है, जो बहुत बड़ी है और पाँच खण्डोंमें विभक्त है, उनके नाम हैं—१. सृष्टिखण्ड, २. सतीखण्ड, ३. पार्वतीखण्ड, ४. कुमारखण्ड तथा ५. युद्धखण्ड। रुद्रसंहिताके अनन्तर तीसरी संहिता है शतरुद्रसंहिता। चौथी संहिताका नाम है कोटिरुद्रसंहिता, पाँचवीं संहिता है उमासंहिता और छठी संहिता है कैलाससंहिता। अन्तिम सातवीं संहिता वायवीयसंहिताके नामसे कही गयी है, जो पूर्व और उत्तर—दो खण्डोंमें विभक्त है। इस प्रकार बृहद् आयामवाले शिवपुराणमें लगभग चौबीस हजार श्लोक हैं।

प्रतिपाद्य-विषयकी दृष्टिसे शिवपुराण अत्यन्त उपयोगी पुराण है। इसमें भक्ति, ज्ञान, सदाचार, शौचाचार, उपासना, लोकव्यवहार तथा मानवजीवनके परम कल्याणकी अनेक उपयोगी बातें निरूपित हैं। शिवज्ञान, शैवीदीक्षा तथा शैवागमका यह अत्यन्त प्रौढ़ ग्रन्थ है। साधना एवं उपासना-सम्बन्धी अनेकानेक सरल विधियाँ इसमें निरूपित हैं। कथाओंका तो यह आकर ग्रन्थ है। इसकी कथाएँ अत्यन्त मनोरम, रोचक तथा बड़े ही कामकी हैं। मुख्यरूपसे इस पुराणमें देवोंके भी देव महादेव भगवान् साम्बसदाशिवके सकल, निष्कल स्वरूपका तात्त्विक विवेचन, उनके लीलावतारोंकी कथाएँ, द्वादश ज्योतिर्लिंगोंके आख्यान, शिवरात्रि आदि व्रतोंकी कथाएँ, शिवभक्तोंकी कथाएँ, लिंगरहस्य, लिंगोपासना, पार्थिवलिंग, प्रणव, बिल्व, रुद्राक्ष, भस्म आदिके विषयमें विस्तारसे वर्णन है। यह उच्चकोटिके सिद्धों, आत्मकल्याणकामी साधकों तथा साधारण आस्तिक जनों—सभीके लिये परम मंगलमय एवं हितकारी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें तो इस पुराणके अध्ययन एवं मनन तथा इसके उपदेशोंके अनुसार चलनेकी विशेष आवश्यकता प्रतीत होती है। शिवपुराणका पठन-पाठन सच्ची सुख-शान्तिके विस्तारमें परम

सहायक सिद्ध हो सकता है। इसी दृष्टिसे इसके प्रकाशनपर विचार किया गया है। वैसे तो आजसे लगभग ५३ वर्ष पूर्व सन् १९६२ ई० के विशेषाङ्कके रूपमें 'संक्षिप्त शिवपुराणाङ्क' नामसे शिवपुराणका संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर गीताप्रेससे प्रकाशित हुआ था, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और आज भी उसकी उपयोगिता उसी रूपमें बनी हुई है तथापि आस्तिक जनों तथा श्रद्धालु महानुभावोंकी तभीसे यह माँग रही कि गीताप्रेससे जैसे मूल संस्कृत श्लोकोंके साथ श्रीमद्भागवत आदि पुराण निकले हैं, वैसे ही शिवपुराणको भी मूल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवादके साथ प्रकाशित किया जाय। पाठकोंकी भावना बहुत अच्छी है, हमारा भी ऐसा ही विचार रहता आया है। भगवत्कृपासे कुछ वर्षोंपूर्व शिवपुराण मूल तो पुस्तक रूपमें प्रकाशित हो गया, किंतु भाषानुवादके साथ प्रकाशनका कार्य संयोगवश सम्पन्न न हो सका। इसमें मुख्य बात यही रही कि यह पुराण विस्तारमें बहुत बड़ा है, इस कारण विशेषाङ्कके रूपमें एक वर्षमें निकलना कठिन है; क्योंकि विशेषाङ्ककी पृष्ठ-संख्या सीमित है। अतः यह विचार बना कि विशेषाङ्ककी पृष्ठ-संख्यामें आवश्यकतानुसार वृद्धि करके शिवपुराणका केवल भाषानुवाद श्लोकाङ्कके साथ दो वर्षोंमें विशेषाङ्कके रूपमें निकाला जाय।

उपर्युक्त योजनाके अनुसार भगवान् सदाशिवका सम्बल लेकर वर्ष २०१७ ई० के विशेषाङ्कके रूपमें शिवपुराणका प्रथम भाग हिन्दी भाषानुवादके रूपमें श्लोकाङ्कसहित प्रकाशन करनेका निर्णय लिया गया है। आशा है अन्य विशेषाङ्कोंकी भाँति यह विशेषाङ्क भी सभीके लिये अत्यन्त उपादेय एवं संग्राह्य होगा। इस विशेषाङ्कमें केवल श्रीशिवपुराणका भाषानुवाद श्लोकाङ्कके साथ दिया जायगा, अतः लेखक महानुभावोंसे सादर अनुरोध है कि वे इस विशेषाङ्कमें प्रकाशनार्थ लेख न भेजें। साधारण अङ्कोंके लिये पूर्ववत् लेख भेजते रहनेकी कृपा करनी चाहिये।

विनीत—

राधेश्याम खेमका

(सम्पादक)

## शिवपुराण-श्रवणकी महिमा

पुराणश्रवणं शम्भोर्नामसङ्कीर्तनं तथा । कल्पद्रुमफलं सम्यङ् मनुष्याणां न संशयः ॥  
कलौ दुर्मेधसां पुंसां धर्माचारोज्झितात्मनाम् । हिताय विदधे शम्भुः पुराणाख्यं सुधारसम् ॥  
एकोऽजरामरः स्याद्वै पिबन्नेवामृतं पुमान् । शम्भोः कथामृतं कुर्यात् कुलमेवाजरामरम् ॥  
सदा सेव्या सदा सेव्या सदा सेव्या विशेषतः । एतच्छिवपुराणस्य कथा परमपावनी ॥  
एतच्छिवपुराणस्य कथाश्रवणमात्रतः । किं ब्रवीमि फलं तस्य शिवश्चित्तं समाश्रयेत् ॥

[ श्रीसूतजी शौनकजीसे कहते हैं—हे मुने! ] शिवपुराणका श्रवण और भगवान् शंकरके नामका संकीर्तन—दोनों ही मनुष्योंको कल्पवृक्षके समान सम्यक् फल देनेवाले हैं, इसमें सन्देह नहीं है। कलियुगमें धर्माचरणसे शून्य चित्तवाले दुर्बुद्धि मनुष्योंके उद्धारके लिये भगवान् शिवने अमृतरसस्वरूप शिवपुराणकी उद्भावना की है। अमृतपान करनेसे तो केवल अमृतपान करनेवाला ही मनुष्य अजर-अमर होता है, किंतु भगवान् शिवका यह कथामृत सम्पूर्ण कुलको ही अजर-अमर कर देता है। इस शिवपुराणकी परम पवित्र कथाका विशेष रूपसे सदा ही सेवन करना ही चाहिये, करना ही चाहिये, करना ही चाहिये। इस शिवपुराणकी कथाके श्रवणका क्या फल कहें? इसके श्रवणमात्रसे भगवान् सदाशिव उस पाणीके हृदयमें विराजमान हो जाते हैं। [ सत्यपुराण ]



# गीताप्रेससे प्रकाशित १७ महापुराण—उपलब्ध

कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹
1897	श्रीमद्देवीभागवत महापुराण (मतान्तरसे) सटीक		789	संक्षिप्त श्रीशिवपुराण—मोटा टाइप	२००
1898	” ” ” ” ” ” ”	४००	44	संक्षिप्त पद्मपुराण	२५०
26,27	श्रीमद्भागवत-महापुराण	५००	1183	संक्षिप्त श्रीनारदपुराण	२००
557	श्रीमत्स्यमहापुराण	२७०	279	संक्षिप्त श्रीस्कन्दपुराण	३२५
48	श्रीविष्णुपुराण	१४०	1111	संक्षिप्त ब्रह्मपुराण	१२०
1432	श्रीवामनपुराण	१२५	539	संक्षिप्त श्रीमार्कण्डेयपुराण	९०
1131	श्रीकूर्मपुराण	१४०	1189	संक्षिप्त श्रीगरुडपुराण	१६०
1985	श्रीलिङ्गमहापुराण	२००	1361	संक्षिप्त श्रीवराहपुराण	१००
<b>केवल हिन्दीमें</b>			631	संक्षिप्त श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण	२००
1362	श्रीअग्निपुराण—सम्पूर्ण (श्लोकाङ्कसहित)	२००	584	संक्षिप्त श्रीभविष्यपुराण	१५०

नोट — गीताप्रेससे प्रकाशित संक्षिप्त पुराण सम्पूर्ण पुराणके हिन्दी भाषामें भावानुवाद हैं। केवल कुछ विस्तृत प्रसंगोंको संक्षिप्त किया गया हो सकता है। १८ में ब्रह्माण्डपुराण गीताप्रेससे नहीं छपा है।

## नवीन प्रकाशन—छपकर तैयार

श्रीविष्णुपुराण (सानुवाद) बँगला (कोड 2040)—श्रीपराशर ऋषिप्रणीत यह पुराण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसके प्रतिपाद्य भगवान् विष्णु हैं, जो सृष्टिके आदि कारण, नित्य, अक्षय तथा एक रस हैं। मूल्य ₹१५०

गीता-प्रबोधनी (कोड 2041) असमिया—ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजके द्वारा प्रणीत गीताकी इस संक्षिप्त टीकामें कुछ श्लोकोंकी संक्षेपमें व्याख्या भी दी गयी है। मूल्य ₹५०

कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹
2046	हनुमानचालीसा—सटीक, नेपाली	५	2051	गजेन्द्रमोक्ष नेपाली	३
2048	शरणागति ”	६	2052	आदित्यहृदयस्तोत्र ”	३
2049	अमोघ शिवकवच ”	३	2053	रामरक्षास्तोत्र ”	३
2050	नारायणकवच ”	३	2044	गीता मोटे अक्षरवाली—सटीक, मलयालम	२०

## धोखेसे सावधान

कुछ लोग गीताप्रेसकी आर्थिक स्थितिपर सोशल मीडियापर भ्रम फैला रहे हैं। यह स्पष्ट किया जाता है कि गीताप्रेस किसी प्रकारका अनुदान (डोनेशन) स्वीकार नहीं करता। किसी व्यक्ति या संस्थाको गीताप्रेसके नामपर कोई चन्दा आदि नहीं देना चाहिये।

अब काठमाडौं, नेपालमें

**गीताप्रेस पुस्तक बिक्री केन्द्र**

(थोक एवं खुदरा पुस्तकोंपर गोरखपुरसे मिलनेवाली सभी सुविधाएँ उपलब्ध)

पसल नं० 6,7,8, माधवराज सुमार्गी स्मृति भवन, वनकाली, पशुपति क्षेत्र, काठमाडौं, नेपाल।

मोबाइल : 9823490038, 9841056107

E-mail: gitapress.nepal@gmail.com , jaikishansarda@hotmail.com



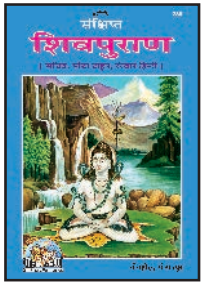
**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**  
  
**By**  
**Avinash/Shashi**

**Icreator of**  
**hinduism**  
**server!**

## श्रावणमासमें पाठ-पारायण एवं स्वाध्यायहेतु गीताप्रेसके प्रमुख प्रकाशन



**संक्षिप्त शिवपुराण ( कोड 789 ) मोटा टाइप, सचित्र, सजिल्द, ग्रन्थाकार—**

शिव-महिमा, लीला-कथाओंके अतिरिक्त इसमें पूजा-पद्धति, अनेक ज्ञानप्रद आख्यान और शिक्षाप्रद कथाओंका सुन्दर संयोजन है। मूल्य ₹२००, ( कोड 1468 ) विशिष्ट संस्करण, मूल्य ₹२५०, गुजराती ( कोड 1286 ) मूल्य ₹२००, कन्नड़ ( कोड 1926 ) मूल्य ₹ १७५, तेलुगु ( कोड 975 ) मूल्य ₹२००, बँगला ( कोड 1937 ) मूल्य ₹१६० प्रत्येकका डाकखर्च ₹४० अतिरिक्त।

**श्रीमद्भागवतमहापुराणम् ( कोड 29 ) मूल, मोटा टाइप, ग्रन्थाकार—**इसके

प्रत्येक श्लोकमें भक्ति, प्रेमकी अनुपम सुगन्धि है। मूल श्लोकोंका पाठ करनेकी दृष्टिसे यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य ₹१६०, डाकखर्च ₹३५ अतिरिक्त। ( कोड 124 ) मूल, मझला, मूल्य ₹१००, विशिष्ट सं० ( कोड 1855 ) मूल्य ₹१००, डाकखर्च ₹३० अतिरिक्त। ( कोड 26, 27 ) हिन्दी-व्याख्यासहित दो खण्डोंमें सेट, मूल्य ₹५००, डाकखर्च ₹६० अतिरिक्त। ( कोड 1951, 1952 ) हिन्दी-व्याख्यासहित पत्राकारकी तरह बेड़िआ, मोटा टाइप, दो खण्डोंमें सेट मूल्य ₹८०० डाकखर्च ₹१०० अतिरिक्त।



कोड	पुस्तक-नाम	मू०र	कोड	पुस्तक-नाम	मू०र	कोड	पुस्तक-नाम	मू०र
586	शिवोपासनाङ्क	१३०	228	शिवचालीसा ( पॉकेट )	३	1862	गोपालसहस्रनामस्तोत्रम्	१५
1985	लिङ्गपुराण—सटीक	२००	1185	” लघु, बँगला भी	२	144	भजनमृत	१२
2020	शिवपुराण—मूल	२५०	1599	शिवसहस्रनामस्तोत्रम्— नामावलिसहितम्	८	142	चेतावनी-पद-संग्रह	३०
2009	भागवत नवनीत— ( श्रीडोंगरेजी महाराज ) गुजराती भी	१६०	1800	पंचदेव-अथर्वशीर्ष-संग्रह	१०	140	श्रीरामकृष्णलीला— भजनावली	३०
2024	गणेशस्तोत्र रत्नाकर	३५	230	अमोघशिवकवच	३	1551	संत जगन्नाथदासकृत श्रीमद्भागवत ( ओड़िआ )	२८०
1899	श्रावणमास-माहात्म्य	३२	नित्यकर्म, भजन एवं आरतीकी पुस्तकें			1732	शिवलीलामृत ( मराठी )	५०
1954	शिव-स्मरण	१०	592	नित्यकर्म-पूजा-प्रकाश ( गुजराती, तेलुगु भी )	६०	श्रीमद्भागवत—सम्पूर्ण हिन्दीमें		
1627	रुद्राष्टाध्यायी—सानुवाद	३०	52	स्तोत्ररत्नावली ( बँगला, तेलुगु भी )	३५	25	श्रीशुक-सुधा-सागर— बृहदाकार	५००
1417	श्रीशिवस्तोत्ररत्नाकर	३०	1367	श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा	१२	1930	श्रीमद्भागवत-सुधा-सागर मराठी, गुजराती, तेलुगु	३००
1343	हर-हर महादेव-चित्रकथा	२५	1355	सचित्र-स्तुति-संग्रह	१०	1945	” विशिष्ट संस्करण	३५०
1156	एकादश रुद्र ( शिव ) ”	५०	1591	आरती-संग्रह, मोटा टाइप	१५	30	श्रीप्रेम-सुधा-सागर ( दशम स्कन्ध )	१००
204	ॐ नमः शिवाय ” ( कन्नड़ एवं बँगलामें भी )	२५	54	भजन-संग्रह	५०			
563	शिवमहिम्नःस्तोत्रम् ( तेलुगु, मराठी भी )	५	1849	भजन-सुधा	१५			

श्रावणमास भगवान् आशुतोष शिव एवं भगवान् विष्णुकी उपासनाका विशिष्ट समय है। इस कालमें किये गये पूजा-पाठ, पुराण-श्रवण, दानपुण्य आदि अक्षय हो जाते हैं। श्रावणमास २० जुलाईसे प्रारम्भ हो रहा है।